युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 28 11 से 17 जुलाई, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 आषाढ़ शु.-03

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

Sarvadeshik Sabha Sanchalan Samiti Secretary

Swami Aryaveshji in South Africa

(12 April 2013 to 10 May 2013)

Report by Rajesh Lutchman, President - Arya Yuvak Sabha - South Africa

Introduction

Following a very successful tour in 2012, Poojya Swami Aryaveshji once again returned to South Africa to preside over the Arya Yuvuk Sabha's centenary celebrations culmination. In 2012 Swamiji's visit had been the catalyst for a number of interesting yet diverse initiatives. As discussed in the previous report, Swamiji's visit had rekindled many aspects of the Arya Samaj's work and this in turn created a wonderfully new energy in developing programmes that can be sustained. Swamiji's gentle nature, humility, genuine concern for the human condition and extensive knowledge really attracted people to him and by the end of the month, his impact in positively influencing the South African Arya Samaj community had become very evident. This report details some of the activities that Swamiji engaged in. In this report we are diverting from the traditional day by day details and will be concentrating on specific events and their specific relevance to the plans that Swamiji had initiated in his previous visit.

Vaidic Message

At each engagement Swamiji delivered lectures where the length varied from 10 minutes to 45 minutes, depending upon the circumstances. Depending upon the audience, Swamiji spoke in Hindi or English. The central theme of his message was on the nature of humanity and our understanding of what being a human being is all about. He extensively discussed, with relevant cross references to the Vedas, about how human beings have evolved through the ages and the essential differences between Man and other forms of God's creation. He emphasized that human beings have a larger responsibility in maintaining the natural balance. He alluded to climate change, the need to transcend religious barriers, the need for social cohesion, the need for the preservation of our natural heritage and most importantly, the need for Mankind to understand the purpose of Life. His lectures were warmly received by the general audience with many people following him from place to place to listen to his messages.

स्वामी आर्यवेश जी दक्षिण अफ्रीका में भारत के राजदूत श्री आर. के. शर्मा तथा अन्य के साथ

The lasting impact of his messages was that, within the South African context, the Arya Samaj community has the responsibility to engage with all South Africans, irrespective of any barriers, to build a Human community that advocates a lifestyle paradigm that is a balance between spirituality and day to day living. His simple portrayal of what constituted spirituality amazed his audiences. The primary objective was to make members of the audience realise that spirituality is not an elusive element that is reserved for highly evolved yogis but a distinct reality for the ordinary layman. The examples quoted by Swamiji were part of the everyday realities of everyman hence people were able to relate to various issues of spirituality that Swamiji presented.

In the first week of his visit, being Sri Ram Naumi, Swamiji spoke about Maryaada Purshottham Sri Ram as one of the two pillars of Hinduism, the other being Sri Krishna. While he quoted extensively from the Ramayana, he contained his message on the Shabri episode where he presented Sant Thulsidas's portrayal of Sri Ram as a highly evolved ideal who transcended all social and religious barriers. Using this example he then related it to modern day bigotry, racial and caste discrimination and other social evils. The audience could easily relate the message. The clear distinction was that Sri Ram's message was that bhakthi had to be an integral part of our living consciousness. It is pointless spending many hours of meditation, bhajan and kirtan while one's neighbours suffered starvation and deprivation. The practical angle of his message was deeply appreciated by the audience.

In his other messages, Swamiji concentrated on the

शेष पृष्ठ 6 पर

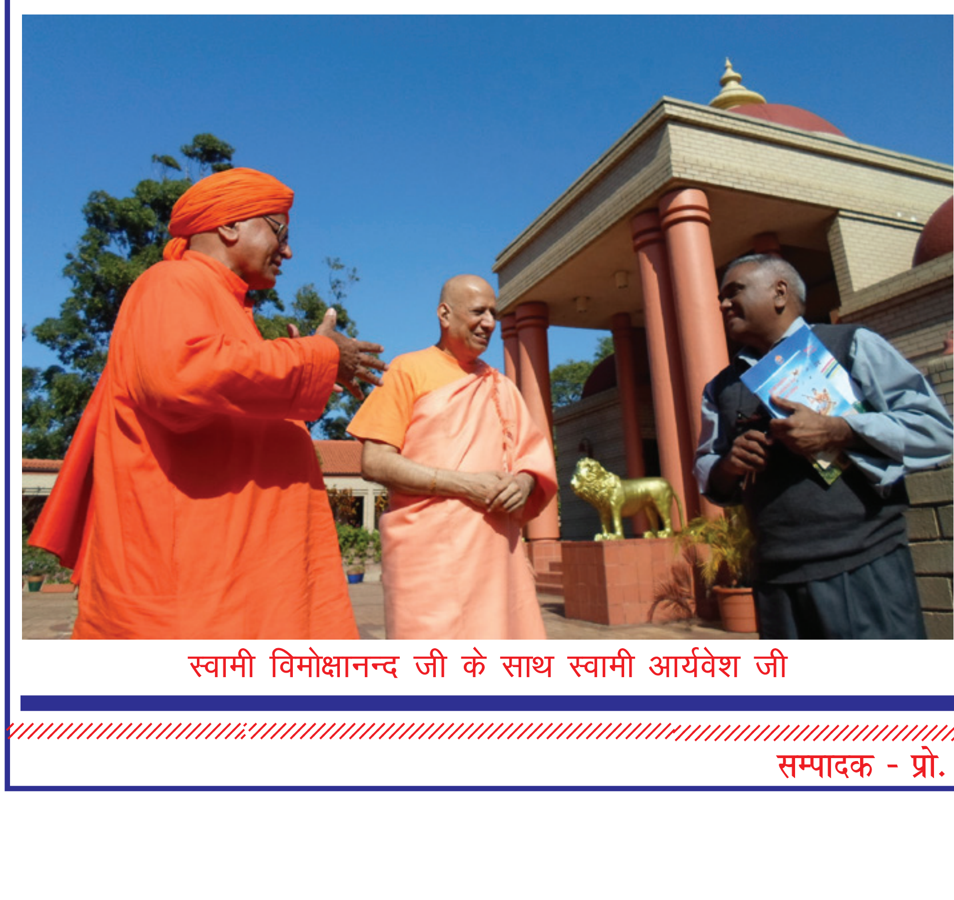

स्वामी विमोक्षानन्द जी के साथ स्वामी आर्यवेश जी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

प्राचीन भारत में गणराज्य

— कमलेश

अंग्रेजी शासन के अधिकारी और अंग्रेज लेखक ऐसे मंतव्य प्रकाशित करते रहते थे कि भारत में सदैव निरंकुश राजाओं का ही शासन रहा है, भारतवासी प्राचीनकाल से ही निरंकुशता के अभ्यस्त रहे हैं, इस्लामी शासकों की निरंकुशता तो सर्वविदित है— इसलिए भारत पर अंग्रेजों जैसा शासन अनुचित नहीं है।

इस चर्चा से इतिहास में प्रचलित राज्य—व्यवस्थाओं के चरित्र पर बातचीत शुरू हो गई। लॉर्ड कर्जन द्वारा 1904 में बंग भंग किए जाने पर यह चर्चा और तेज होने लगी। प्राचीन भारत की राज्यव्यवस्था का प्रश्न राष्ट्रीय स्वाभिमान से जुड़ गया।

काशीप्रसाद जायसवाल ने इस विषय पर सर्वप्रथम सबसे प्रामाणिक विचार प्रस्तुत किए। जायसवाल ने 1911—13 में 'कलकटा वीकली नोट्स' और 'मॉडर्न रिव्यू' में अंग्रेजी में लेख लिखे और 1912 के हिंदी साहित्य सम्मेलन में एक निबंध हिंदी में पढ़ा। इन लेखों के आधार पर 1918 में अंग्रेजी में एक ग्रंथ बना, जो कुछ विलंब से 1924 के अंत में कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ। इसे तुरंत वहां इतिहास के पाठ्यक्रम में स्थान मिला। शीघ्र ही देश के अन्य विश्वविद्यालयों में भी इसे पढ़ाया जाने लगा। प्राचीन भारत की राज्य—व्यवस्था पर लिखा गया यह पहला और महत्त्वपूर्ण ग्रंथ था। इसका रामचंद्र वर्मा ने हिंदी अनुवाद किया। इसी ग्रंथ का पुनर्मुद्रण अब हुआ है।

काशीप्रसाद जायसवाल अनुपम इतिहासकार थे। उन्होंने प्राचीन भारत के उन्हीं पहलुओं पर शोधकार्य किया, जिनको अन्य किसी ने नहीं छुआ था। हिंदू राज्य—तंत्र के अलावा उन्होंने 180 से 320 ई. तक के इतिहास पर भी लिखा। तब तक इस काल के इतिहास के विषय में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं थी। इसीलिए इसे 'अंधकार युग' कहते थे। जायसवाल ने खुदाइयों में प्राप्त सामग्री, मूर्तियों, मुद्राओं और पुराणों में मिलने वाले विवरणों के आधार पर नाग—भारशिव, वाकाटक और सातवाहन साम्राज्यों का यह विवरण पहली बार 1932 में प्रकाशित किया।

प्राचीन मुद्राओं के विषय में उनकी विशेषज्ञता का सभी इतिहासकार लोहा मानते थे। मौर्य और गुप्तकाल की मुद्राओं पर उनके कार्य पर लंदन की रायल एशियाटिक सोसाइटी ने उन्हें 1931 में व्याख्यान देने के लिए बुलाया। वे 'न्युमिस्मैटिक सोसाइटी ऑफ इंडिया' के 1934 और 1936 में दो बार अध्यक्ष चुने गए। प्राचीन लिपियों को पढ़ने में उन्हें दक्षता प्राप्त थी, वे खारवेल (173—160 ई.पूर्व) के हाथीगुंफा लेख को बांचने में सफल रहे। उनकी प्रेरणा से नालंदा आदि लुप्तप्राय स्थानों की पुरातात्त्विक खुदाई हुई। पटना संग्रहालय के स्थापना काल से वे घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे और उसके संग्रह को बनाने और बढ़ाने में उनका विशेष योगदान था।

श्री काशी प्रसाद जायसवाल द्वारा लिखित ''हिन्दू राजतन्त्र ग्रन्थ में उन्होंने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखे गये अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के छठवें समुल्लास में वर्णित राज व्यवस्था कैसी हो को परिपुष्ट किया है। महर्षि ने राज्य व्यवस्था को चलाने के नियम तथा उससे होने वाले लाभों का वर्णन विस्तार से अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किया है।

उनकी जीविका का साधन वकालत थी। लेकिन उनका शेष समय इतिहास—शोध में ही लगता था। उनसे इतिहास के विद्यार्थी प्रोत्साहन पाते ही थे, हिंदी के साहित्यकारों, पत्रकारों को भी उनसे प्रभूत प्रेरणा और सहायता मिलती थी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन को उन्होंने ही तिब्बत की यात्रा पर भेज कर वहां से असंख्य पांडुलिपियां मंगवाईं, जिन पर आज तक शोध और अनुवाद कार्य चल रहा है। इस महत्त्वपूर्ण सामग्री को सुरक्षित रखने के लिए काशीप्रसाद जायसवाल रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना हुई।

'हिंदू राज्य तंत्र' के दोनों खंडों में कुल मिला कर उनतालीस अध्याय हैं। इनके लिखने में वेदों, पुराणों, महाभारत, धर्मशास्त्र ग्रंथों, पाणिनि के व्याकरण, कौटिल्य के अर्थशास्त्र (इसकी पांडुलिपि जायसवाल द्वारा इस विषय पर हाथ लगाने के कुछ ही वर्ष पहले 1905 में मिली थी), काव्य—नाटक आदि संस्कृत के साहित्य ग्रंथों, मेगस्थनीज और एरियन जैसे यूनानी वृत्तांतों और इतिहास के अन्य सभी स्रोतों का पूरा उपयोग किया गया है। इसके दो खंडों में 1000 ई. पूर्व से लेकर 1000 ई. तक भारतीय इतिहास के दो हजार वर्षों में विकसित राजनीतिक संस्थाओं की विवेचना की गई है।

इस ग्रंथ में पहले वैदिककाल की 'समिति' और 'सभा' संस्थाओं का विवरण है। वैदिककाल तक भारतीय समाज काफी विकसित हो चुका था। इन संस्थाओं में समाज के चुने गए प्रतिनिधि भाग लेते थे। काशीप्रसाद जायसवाल ने 'समिति' और 'सभा' के संघटन, इनके राजनीतिक कार्यों, निर्णय के पहले इनमें चलने वाले वाद—विवादों और समाज में न्याय स्थापित करने में इनकी भूमिका का प्रमाणों के साथ विवेचन किया है।

वैदिककाल के बाद गणों और संघों का युग आता है। उस समय पश्चिमी और भारतीय विद्वानों में इन शब्दों के अभिप्राय को लेकर काफी मतभेद थे। जायसवाल ने पाणिनि, जातकों, महाभारत, धर्मशास्त्रों, अमरकोष, अवदानशतक आदि जैन ग्रंथों में प्रयुक्त 'गण' शब्द की परीक्षा करते हुए पाणिनि के मत की पुष्टि की, जिन्होंने 'संघ' और 'गण' को समानार्थक और देश के अनेक भागों में प्रचलित राजनीतिक संस्था बताया था। उस समय तक धार्मिक 'संघ' नहीं बने थे। पाणिनि से यह भी पता चलता है कि उस समय इन गणों में ब्राह्मणों और क्षत्रियों के अलावा अन्य जातियां भी भाग लेती थीं। 'गण' के अनेक सदस्यों के वर्ण अभी तक निर्धारित नहीं हुए थे।

यूनानी लेखकों ने पंजाब और सिंध में 'जाथरोई' लोगों के होने का उल्लेख किया है। 'अर्थशास्त्र' ने इन्हें एक संघ कहा है। संभवतः यह क्षत्रिय लोगों का संघ था, जिन्हें बाद में खत्री कहा जाने लगा। ये लोग सिंध और पंजाब में 1947 तक बसे हुए थे। यूनानी लेखकों द्वारा प्रयुक्त अन्य शब्दों का विश्लेषण करते हुए जायसवाल ने अरिष्ट, सौभूति, आदि गणों का उल्लेख पाया है। सिकंदर को लौटते हुए सिंधु नदी से ब्लूचिस्तान प्रजातांत्रिक राज्य मिले थे, जिनमें मालव, अंबष्ठ और क्षुद्रक गणों के लोग भी थे।

जायसवाल ने यूनानी ग्रंथों के आधार पर इन गणों में चलने वाली शासन—व्यवस्था का विवरण दिया है। उन्होंने ऐतरेय ब्राह्मण और जैन आचारांगसूत्र आदि के आधार पर अराजक राज्य, गण द्वारा शासित राज्य, युवराज द्वारा शासित राज्य, द्वैराज्य, वैराज्य और दरों द्वारा शासित राज्य आदि राज्य—व्यवस्थाओं की कल्पना की है। उन्होंने इन प्रजातंत्रों की कार्यप्रणाली, इनकी नागरिकता, इनकी न्याय—व्यवस्था और कानून और 'महाभारत' के 'शांति पर्व' के अनुसार इन प्रजातंत्रों की मुख्य बातों के साथ ही नए प्रजातंत्रों के सृजन का विवरण दिया है।

मौर्य साम्राज्य की स्थापना के बाद भी मौर्य साम्राज्य के अंतर्गत बहुत—से राज्य ऐसे थे, जो अपना शासन स्वयं चलाने के लिए स्वतंत्र थे। यौधेय, मालव, राजन्य आदि गण तो शुंग काल और क्षत्रप काल के बाद भी बचे हुए थे। सिकंदर का सफल मुकाबला न कर पाने के कारण गण शासन प्रणाली की आलोचना होने लगी थी। कौटिल्य से यह भी जानकारी मिलती है कि इनके अधिकारियों की व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता और शक्ति की तृष्णा के कारण इनमें ईर्ष्या और द्वेष के बीज बोए जा सकते हैं। अनेक कारणों से गण राज्यों का ह्रास और नाश हुआ होगा।

ग्रंथ के दूसरे खंड में जायसवाल ने एकराजतंत्र की विवेचना की है। ऐतरेय ब्राह्मण और बाद के ग्रंथों में दी गई राज्याभिषेक की व्यवस्थाओं के आधार पर उन्होंने कुछ सिद्धांत निकाले हैं। प्रारंभ में ये राज्य जनपद और पौर राज्य थे। इनका शासन बहुत विचारसम्मत होता था। इनके संगठन में मंत्रिपरिषद का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान होता था। इससे लगता है कि राजा निरंकुश नहीं हो सकते थे। अशोक के शिलालेखों से पता चलता है कि मंत्रिपरिषद अशोक के आदेशों का विरोध और अवज्ञा कर सकती थी।

जायसवाल के शब्दों में ''हिंदुओं का एकराज—राज्य वास्तव में एक नागरिक राज्य था।... हिंदू राज्य कभी सैनिक राज्य नहीं होता था।... प्रधान सेनाध्यक्ष और सेना के दूसरे बड़े—बड़े अधिकारी राष्ट्र—परिषद द्वारा नियुक्त किए जाते थे।... सेनाएं किसी राजा को राज्यच्युत नहीं कर सकती थीं, कभी—कभी जनता ने ही उन्हें राज्यच्युत किया है।... वैदिक काल से ही सेना का पद राजा के पद से बिल्कुल भिन्न हुआ करता था। इसी प्रकार हमारे यहां यह भी सिद्धांत था कि जहां तक हो सके युद्ध न किया जाए और विशेषकर केवल दूसरों पर विजय प्राप्त करने के लिए युद्ध करना तो और अनुचित समझा जाता था।...राज्यतंत्र में धर्म या कानून का स्थान सबसे बढ़ कर और उच्च था।... एरियन ने 'इंडिका' में लिखा है कि 'वे (हिंदू) कहते हैं कि न्यायशीलता किसी हिंदू राजा के भारत के सीमाओं से बाहर जाकर विजय प्राप्त करने से रोकती है।'... मौर्य सम्राटों के पड़ोसी सेल्यूकस का साम्राज्य बहुत ही दुर्बल और छिन्न—भिन्न हो रहा था।... उन्होंने उसे कभी जीतने का विचार भी नहीं किया।... हिंदू राज्यों की आयु असाधारण रूप से दीर्घ हुआ करती थी और राजा और प्रजा में कभी कोई भीषण संघर्ष नहीं होता था और हम समझते हैं कि समाजशास्त्र के ज्ञाता इतिहासज्ञ लोग इन बातों का मुख्य कारण यही मानेंगे कि हिंदू राज्यतंत्र का स्वरूप नागरिक और धर्मयुक्त था।''

जायसवाल के इस मौलिक शोधग्रंथ का महत्त्व अब भी बरकरार है। इसके फिर से प्रकाशन से निस्संदेह इतिहास के शोधार्थियों को लाभ मिलेगा।

हिंदू राज्य—तंत्र, काशीप्रसाद जायसवाल, अनुवादक, रामचंद्र वर्मा विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, 400 रुपए।

— जनसत्ता 23 जून, 2013 से साभार

विश्व की 40 फीसदी कुपोषित आबादी भारत में

नई दिल्ली : देश में भारी मात्रा में पैदा होने वाले अनाज को सड़ने के लिये खुले आसमान के नीचे तथा गोदामों में पड़े अनाज की अनदेखी के चलते गोदामों में सड़ रहा अनाज अवाम के लिए नहीं शराब फैक्ट्रियों के लिए सड़ाया जा रहा है। ताकि शराब फैक्ट्रियों को इस अनाज को सड़ाने गलाने में समय और मेहनत खर्च नहीं करनी पड़े और निःशुल्क इसे वे अपनी फैक्ट्रियों में ले जा सकें तथा भारी मुनाफा कमा कर राजनेताओं और अफसरों की जेबें भर सकें। यही कारण है कि सरकार की नीतियों के उचित क्रियान्वयन के अभाव में विश्व में सर्वाधिक कम वजन के बच्चे और कुपोषित आबादी का 40 फीसदी भारत में है।

कनाडा स्थित गैर सरकारी संगठन माइक्रोन्यूट्रिएंट इनीशिएटिव के अध्यक्ष और वैश्विक स्वास्थ्य विशेषज्ञ एम. जी. वेंकटेश मन्नार ने बताया कि उभरती अर्थव्यवस्था होने के बावजूद स्वास्थ्य और पोषण के मामले में भारत की हालत ब्राजील, नेपाल, बांग्लादेश और चीन जैसी है।

मन्नार ने बताया कि भारत में बच्चों में बाधित विकास, कम वजन और रक्त की कमी दुनिया में सर्वाधिक है। इसमें सर्वाधिक त्रासदीपूर्ण यह है कि भारत के पास समस्याओं को सुलझाने के लिए जरूरी सभी कार्यक्रम और नीतियाँ हैं लेकिन उनका उचित क्रियान्वयन नहीं हो रहा है। मातृत्व और बाल कुपोषण पर लांसेट की 2013 की श्रृंखला के सह लेखक मन्ना ने कहा कि यहाँ यह कई मंत्रालयों जैसे स्वास्थ्य, महिला और बाल विकास, शिक्षा तथा ग्रामीण विकास आदि में बंटा हुआ है। इस प्रकार इस समस्या को उठाने वाला कोई एक नहीं है और न ही उचित जवाबदेही है।

कनाडा के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार ''दी आर्डर ऑफ कनाडा'' से सम्मानित मन्नार ने कहा कि राज्य और केन्द्र के बीच समन्वय का अभाव है जिसके चलते इस सम्बन्ध में बनाई गई नीतियों और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की समस्या है। उन्होंने कहा कि चौंकाने वाली बात यह है कि वर्ष 2005 से राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण नहीं किया गया है। हम आज भी पुराने आंकड़े देखते हैं और हमें यह पता नहीं है कि हमने तरक्की की है या पिछड़े हैं।

मन्नार ने हालांकि अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए महाराष्ट्र जैसे कुछ राज्यों की सहायता की है। उन्होंने कहा कि यदि महाराष्ट्र ऐसा कर सकता है तो अन्य राज्य क्यों नहीं। सरकार से कार्यवाही करने की अपील करते हुए उन्होंने कहा कि भारत को किसी मदद के लिए बाहर देखने की जरूरत नहीं है क्योंकि उसके पास समस्या को सुलझाने के लिए सभी जरूरी नीतियाँ और संसाधन हैं। उन्होंने कहा कि भारत को कार्यवाही करनी होगी, अन्यथा इसके गम्भीर परिणाम होंगे।

उन्होंने सवालिया अंदाज में कहा कि इस सारी आर्थिक तरक्की का मतलब क्या है यदि नई पीढ़ी विश्व मानकों के अनुसार गैर उत्पादक और निष्क्रिय साबित हो। यूनीसेफ द्वारा तैयार की गई वर्ष 2013 की विश्व बाल रिपोर्ट के अनुसार पांच से कम उम्र के बच्चों की मृत्युदर में

भारत 49वें स्थान पर है जबकि चीन, ब्राजील, नेपाल और बांग्लादेश क्रमशः 115वें 107वें, 57वें और 60वें स्थान पर हैं। आंकड़े बताते हैं कि भारत में एक हजार जन्म पर नवजात शिशुओं की मृत्यु दर वर्ष 2011 में 32 थी जबकि ब्राजील में यह प्रति हजार पर दस और बांग्लादेश में प्रति हजार पर 28 थीं।

अग्रगामी संदेश, जयपुर से साभार

औरतों का यह सृजन समय

— क्षमा शर्मा

औरत चौबीस में से अठारह घंटे सिर्फ काम करती रहती हैं। उम्र कैसे निकल जाती है पता ही नहीं चलता। अगर ध्यान से देखिए तो ये अठारह घंटे किसी न किसी सृजनात्मकता में ही बीतते हैं। बेशक वह कागज कलम की न हो।

— क्षमा शर्मा

लोग कहते हैं समय बहुत बुरा है। मगर औरतों की नजर से देखिए तो समय बहुत अच्छा है। वे घर से बाहर निकली हैं। नौकरी कर रही हैं। आसमान छू रही हैं। सारे कानून उनके पक्ष में हैं। संपत्ति के अधिकार उन्हें मिलते हैं। शिक्षा स्वास्थ्य सभी मसलों पर ध्यान दिया जा रहा है।

लोग कहते हैं औरतों के प्रति अपराध बढ़े हैं। बलात्कार बढ़े हैं। लेकिन लगता है कि बढ़ा कुछ नहीं है, इन घटनाओं की खबर बढ़ी है। पहले होता सब कुछ था मगर औरतों के प्रति किए गए अपराध खबर नहीं बनते थे। उन्हें घरेलू मसला कहकर फर्श के नीचे खिसका दिया जाता था। अब अगर अपराध खबर बनते हैं तो उनसे निपटने के तौर–तरीके भी सोचे जाते हैं। इसलिए खबरों का आना और उनसे निपटना एक अच्छी बात है।

हालांकि एक औरत का लिखना सब कामों के बाद में आता है। घरेलू जिम्मेदारियों को छोड़कर लिखना लगभग असंभव सा है। पहले घर, बच्चे, नौकरी, दुनियादारी, बीमारी–हारी, दफ्तर की पॉलिटिक्स, फिर कुछ समय बचा तो लिखना। गृहस्थी के चक्कर में फँसी एक स्त्री के लिए लिखना कभी भी पहले नंबर पर नहीं आता। एक लेखिका अपनी घरेलू जिम्मेदारियों को परे खिसकाकर लेखिका बनने का मुगालता नहीं पाल सकती। पहले तो उसका जमीर ही इजाजत नहीं देगा फिर उसे दुनिया भी नहीं जीने देगी। आप कहेंगे एक लेखक को दुनिया की क्या चिंता?तो कहने की बात कुछ और है और गुपचुप कहने की बात उससे अलग। एक तरफ पुरुषों का वर्ग किसी लेखिका के घर घुस्सूपन का मजाक उड़ाता है तो दूसरी तरफ उसे सती–सावित्रीनुमा कोड़े से पीटता भी है। किसी औरत के लिए लिखना दुधारी तलवार की तरह है।

एक स्त्री के सृजन का समय तो सवेरे पाँच बजे से ही शुरू होता है। सृजन का अर्थ क्या सिर्फ कहानी कविता लिखना ही है। खाना बनाना, घर संभालना, हर एक की रुचियों के अनुसार खुद को ढालना, बहुत मेहनत समय और सृजनात्मकता माँगता है। हाँ, स्त्री के घरेलू कामों को अक्सर चूल्हे–चौके के खाते में डाल दिया जाता है। वे औरतें जो अपना पूरा जीवन घर में होम कर देती हैं उनके परिश्रम के रूप में उन्हें जीवन भर उपेक्षा मिलती है। उनकी क्रिएटिविटी, कलात्मकता किसी को क्यों नहीं दिखती। यह उनके प्रति एक भारी अन्याय है। औरत की क्रिएटिविटी तो उसी दिन शुरू हो जाती है जब वह घर भर को संभालती है। क्योंकि पुरुष अक्सर घर नहीं संभालते। उन्हें तो परोसी हुई थाली मिलती है इसलिए वे अपनी ही सृजनात्मकता के मानक औरतों पर लागू करते हैं। इसीलिए उन्हें अक्सर अपनी पत्नियाँ तमाम मेहनत और क्रिऐटिविटी के बावजूद 'खाँटी घरेलू' नजर आती हैं। यह एक अफसोसजनक बात है। इसीलिए अब लगने लगा है कि औरतों की क्रिएटिविटी को आँकने के मानक पुरुषों से अलग होने चाहिए।

एक बार 'जागरण' से इंटरव्यू करने आई रचना नाम की लड़की ने पूछा था – आप कहानियाँ कब सोचती हैं?तब मैंने कहा था किचन में रोटियाँ बेलते हुए। एक क्रिएटिविटी दूसरी क्रिएटिविटी को बढ़ाती है। अच्छा खाना बनाना सबसे बड़ी क्रिएटिविटी है। मैंने किचन में पर्चियाँ टाँग रखी हैं। जैसे ही कोई आइडिया आता है मैं खो जाने के डर से उसे एक लाइन में लिख देती हूँ। रास्ते में हुई तो अपनी डायरी में नोट करती हूँ। यही सृजन के छोटे क्षण हैं जो बहुत व्यस्त शिड्यूल में यहाँ–वहाँ से चुराने पड़ते हैं। कम्प्यूटर होने के बाद यह और आसान हुआ है। टेक्नोलॉजी क्रिएटिविटी को बढ़ाने में वरदान साबित हुई है। जो लोग इसे मोन्सटर की तरह देखते थे वे भी समझने लगे हैं कि एक चिट्ठी के मुकाबले मेल पर कोई रचना भेजना कितना आसान है। लिखना और किसी आइडिया को पलक झपकते सेव कर लेना और भी आसान है। समय की बचत ही वह जादू है जो सृजनात्मकता को बढ़ाने में बेहद सहायक हो सकता है।

यहाँ मैं यह भी सोच रही हूँ कि आखिर हम किस समय की बात कर रहे हैं?कौन–सा समय?जो बीत गया या जो आज है या जो कल होगा। क्या हमारे सामने कल के वे दुःस्वप्न हैं जिनसे हम गुजर कर आए हैं। या आज के संघर्ष हैं अथवा कल की चिंताएँ हैं। बीता हुआ समय कठिनाइयों के बावजूद कितना आकर्षक लगता है। ऐसा कि अभी–अभी गुजरा है। हाथ बढ़ाकर उसे छुआ जा सकता है। हालांकि ऐसा होता कभी नहीं है। ऐसा भी लगता है कि वर्तमान इतना बुरा और भविष्य इतना डरावना क्यों लगता है?अगर औरतों के नजरिए से सोचूँ तो ये तीनों समय कठिनाई से भरे हैं, एक दिन के तीन प्रहर की तरह। कल जो था पढ़ाई–लिखाई, नौकरी, शादी, घर–गृहस्थी, लिखना–पढ़ना जो आज तक चला आता है। यह बात कड़वी मगर सच्ची जरूर है कि आज भी औरत की मुक्ति उसकी मृत्यु है, क्योंकि स्त्री का स्टीरियो टाइप नहीं बदला है। दोहरी–तिहरी जिम्मेदारियों से वह कभी निजात नहीं पाती। जिम्मेदारियों के धागे उधेड़ने–बुनने से ही कभी फुरसत नहीं मिलती। अगर लेखिका हुई तो समझिए आफत–ही–आफत। अगर घर में कोई मेहमान आ गया और कोई स्त्री कहानी लिखने में व्यस्त है और वह उस मेहमान की उचित देखभाल नहीं कर पाई तो सब कहेंगे ऐसा भी क्या लिखना। घर में आए गए का ख्याल रखना ज्यादा जरूरी है या लिखना। लिखकर ऐसा कौन–सा तीर मार लोगी। सुनीता जैन ने एक बार कहा था कि अगर रिश्तेदारों के आने पर मैं लिखती रहूँ, उन्हें कुछ समय इंतजार करना पड़ा तो सब बुरा मानेंगे। जबकि मेरे पति ऐसा करें तो सब चुपके–चुपके बात करेंगे। यह भी कहेंगे कि वे लेखक हैं। उन्हें डिस्टर्ब न किया जाए। एक लेखिका का लेखन घर के सारे काम निपटाने के बाद शुरू होता है यानी कि जैड ग्रेड की प्रायोरिटी। जबकि एक पुरुष का लेखन सर्वोपरि होता है। उसे सब किस्म की जिम्मेदारियों से लेखक होने की विशेषता के कारण मुक्त मान लिया जाता है।

लोग कहते हैं यह बुरा समय है। मैं तो कहूँगी कि औरतों के लिए उनकी सृजनात्मकता के लिए यह बहुत अच्छा समय है। क्या मेरी नानी या दादी उन अधिकारों की कल्पना कर सकती थीं जो आज की औरतों को मिले हैं। औरतों से सम्बन्धित बुरी खबरें आती हैं। कहीं बलात्कार हो जाता है, कोई औरत मार दी जाती है तो लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि यह बहुत बुरा समय है। मुझे तो लगता है पहले शायद इससे अधिक अपराध होते थे मगर वे कभी खबर नहीं बनते थे। खबर आना एक शुभ लक्षण है। औरतों के सवालों को मीडिया में जगह मिल रही है।

एक स्त्री अपने लिखने के लिए कितना समय निकाल पाती है यह उसके घर के लोगों पर बहुत निर्भर करता है। मेरी माँ के लिए दुनिया में लेखक होने से बड़ी कोई बात नहीं थी। उसके लिए तुलसीदास और जयशंकर प्रसाद से बड़ा दुनिया में शायद भगवान भी नहीं था। इसीलिए जब कभी मेरे बहुत बड़े पद पर काम करने वाले इंजीनियर भाई से उसकी लड़ाई हो जाती तो वह कहती तू हथौड़ा छाप मेरी लड़की का क्या मुकाबला करेगा। वो लेखक है लेखक। और मेरे बड़े भाई जो खुद कॉलेज में पढ़ाते थे, लिखने–पढ़ने का शौक रखते थे, उन्होंने ही मुझे पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ना सिखाया। कॉलेज लाइब्रेरी से एक से एक किताबें लाकर देते। बहुत छोटी उम्र में ही उन्होंने दिनकर, महादेवी, प्रेमचन्द, प्रसाद आदि को पढ़वा दिया। हाँ यह बात अलग है कि उनसे छिप–छिपकर हम गुलशन नंदा को भी पढ़ते थे और कुशवाहा कांत को भी।

सच्चाई यह है कि हमारी पीढ़ी की औरतों में सुपरवुमैन बनने की चाहत रही है। झाड़ू, पोंछा, बरतन, कपड़े धोना, खाना पकाना, मसाले पीसना, अचार डालना, गेहूँ को धोना, सुखाना, आटा पिसवाना, बाजार से खरीददारी, छोटी–मोटी सिलाई, साड़ी में फॉल लगाना, बच्चों की देखभाल, दुनियादारी, आना–जाना, नौकरी, रेडियो प्रोग्राम, टीवी प्रोग्राम, नौकरी और लिखना ये सारे काम कुछ वर्ष पहले तक मैं खुद करती रही हूँ। अब सोचिए ऐसी सुपरवुमैन की हालत क्या होती है। चौबीस में से अठारह घंटे वह सिर्फ काम करती रहती है। उम्र कैसे निकल जाती है पता ही नहीं चलता। अगर ध्यान से देखिए तो ये अठारह घंटे किसी न किसी सृजनात्मकता में ही बीतते हैं। बेशक वह कागज कलम की न हो। और कम्प्यूटर के इस जमाने में तो कागज और कलम की भी जरूरत नहीं।

पूरे जीवन मेरे पास इतना कम समय रहा है कि हमेशा लक्ष्य बनाने पड़े। इनमें भी लिखने का लक्ष्य। बहुत से लोग इसे मशीनीकरण कहेंगे। मगर लक्ष्य बनाकर काम करना आपकी रचनात्मकता को बढ़ाता है। अपने कम समय का, सदुपयोग करने के लिए, मैं लिखने का लक्ष्य बनाती थी। पत्रकारिता से जुड़ी थी, इसलिए शब्दों की अहमियत पता थी। जब कागज–कलम का इस्तेमाल करती थी तो मैंने एक बार शिड्यूल बनाया कि हर रोज एक हजार शब्द लिखने हैं। अब होता यह था कि वाशिंग मशीन का बजर बज रहा है। मैं अभी पचास शब्द ही लिख पाई हूँ। उधर दौड़ रही हूँ। कपड़े निचोड़ रही हूँ। उन्हें रिन्स करने डाल रही हूँ। उधर कुकर की सीटी बज रही है। अरे दूसरे चूल्हे पर रखी सब्जी तो नहीं जल गई। अभी दाल में छौंक लगाना है। फिर पैक करने से पहले उसे ठंडा करना है। और रोटियाँ तो बनी ही नहीं।

उधर पचास शब्द यानी कि अभी पूरे नौ सौ पचास शब्दों का कोड़ा लहरा रहा है। ऐसे में घड़ी की सूई भी कुछ तेजी से भाग रही है। सवा नौ की चाटर्ड कहीं निकल न जाए। बाहर कूड़े वाला घंटी बजा रहा है। सत्यानाश, फोन अलग से बज रहा है। भाग–भाग। जल्दी कर। तब क्या हो। एक हजार शब्द का जो वायदा खुद से किया है, वह कैसे पूरा हो। शाम को खाना पकाते–पकाते, कभी पचास शब्द, कभी दस लाइनें कभी किसी लेख और कहानी का पूरा हो जाना। और फिर इस बात की निराशा जो कहना चाहती थी या मन में जो उमड़–घुमड़ रहा था वह तो कहाँ उड़ गया। लिख तो कुछ और ही दिया गया। अरे यह क्या हुआ?ऊपर से बच्चा चिल्ला रहा है कि उसका होमवर्क पूरा नहीं हुआ। मैप्स चाहिए। रात के दस बजे कौन सी दुकान खुली होगी?फिर भी कोशिश करने में क्या हर्ज है?और बेटी कह रही है कि उसे तो स्कूल में कल छोले–भटूरे ले जाने हैं। उन्हें बनाने के लिए दही में मैदा गूँथनी होगी। छोले भिगोने हैं। जल्दी उठना है और कल दस बजे से मैनेजमेंट की मीटिंग भी है। अगले साल के टारगेट्स क्या होंगे, इसका प्रजेंटेशन है। पी पी टी बनानी है। पी पी टी बनाने में एक बजेगा तो सवेरे जल्दी कैसे उठूँगी। फिर भी उठना तो है ही छोले–भटूरे बनाने हैं और उनके साथ हरी चटनी भी चाहिए। सालों तक चलने वाला या यूँ कहूँ कि जिंदगी भर खत्म न होने वाला यह एक सिलसिला है।

एक नौकरी पेशा स्त्री, घर से दो चार होती स्त्री, जब लिखने का शौक भी पालती है तो ऐसा ही होता है। मगर यह बात भी सच है कि ज्यादा व्यस्तता अधिक काम ही नहीं करा लेती आपको अधिक स्वस्थ तथा बैक बाइटिंग बिचिंग से भी दूर रहने का मौका भी देती है। विष्णु नागर जी मुझे कई बार धमकी दे चुके हैं कि मेरा कैरीकेचर करेंगे और बतायेंगे कि मुझे तो सिर्फ घर से दफ्तर और दफ्तर से घर का रास्ता मालूम है। मैं अक्सर उन्हें याद दिलाती रहती हूँ कि वह ऐसा कब कर रहे हैं। मेरा मित्र जगदीश्वर कहता है कि एक बार वह लोगों को फेसबुक पर बतायेगा कि कपड़े धोते और झाड़ू पोंछा करते हुए कैसे कहानी लिखी जाती है। सच मानिए तो यह मेरी सुपरवुमैन बनने और दिखने की ग्रंथि ही है, वरना घर में मुझसे किसी ने नहीं कहा कि मैं लगातार इतनी भागदौड़ करूँ टौर रात–दिन जोड़ों के दर्द से हाय–हाय करूँ।

क्या हम इसी को कहेंगे साहित्य और सृजन या एक स्त्री के काम के घंटे। या एक मध्यवर्ग की स्त्री का सैंडविच बन जाना।

इन दिनों घरेलू महिलाओं के काम का आकलन सरकार करना चाहती है ताकि उन्हें घरेलू काम के बदले पति की तनख्वाह में से सेलरी दी जा सके। मैं तो कहूँगी कि पहले सरकार को उन कामकाजी महिलाओं के काम का आकलन करना चाहिए जो घर और दफ्तर के बीच लगातार सैंडविच बनी रहती है।

बल्कि मैं सोचती हूँ कि औरतों के जो भी काम हैं जो उन्हें विरासत में मिले थे जैसे कि कढ़ाई, बुनाई, सिलाई, खाना पकाना, अचार पापड़–बड़ियाँ बनाना आखिर 'पुरुष विमर्श' ने उन्हें क्यों कर सृजनात्मकता से बाहर कर दिया। आज तो अलग–अलग इंस्टीट्यूट भारी–भरकम फीस लेकर इन्हें सिखाते हैं। वे लोग जो घरमें बनी इन चीजों को स्वाद लेकर खाते हैं वे ही इन्हें मात्र घरेलू काम कहकर औरतों की कलात्मकता को फर्श के नीचे खिसका देते हैं। फैशन डिजाइनर बनना बड़ी बात है और घर में औरत द्वारा सिलाई करना बुरी बात। फाइव स्टार शैफ बनना गर्व की बात है और घर में औरत का छप्पन व्यंजन बनाना मात्र उसका घरेलूपन। ऐसा क्यों?औरत के श्रम की इतनी बेकदरी क्यों?यदि घर में औरतों के उस परिश्रम की इतनी बेकदरी है जिसके लिए वे रात–दिन खटती हैं तो उनके लेखन की क्यों न हो?

लोग कहते हैं यह बुरा समय है। मैं तो कहूँगी कि औरतों के लिए उनकी सृजनात्मकता के लिए यह बहुत अच्छा समय है। क्या मेरी नानी या दादी उन अधिकारों की कल्पना कर सकती थीं जो आज की औरतों को मिले हैं। औरतों से सम्बन्धित बुरी खबरें आती हैं। कहीं बलात्कार हो जाता है, कोई औरत मार दी जाती है तो लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि यह बहुत बुरा समय है। मुझे तो लगता है पहले शायद इससे अधिक अपराध होते थे मगर वे कभी खबर नहीं बनते थे। खबर आना एक शुभ लक्षण है। औरतों के सवालों को मीडिया में जगह मिल रही है। बुरी खबर हो तो उसका निदान भी संभव है। अगर खबर दबा दी जायेगी तो उसका निदान कैसे होगा। पहले परिवार की इज्जत के नाम पर अक्सर खबरें दबा दी जाती थीं। औरतों की बीमारी ठीक कैसे होगी। कहीं–कहीं औरतों से सम्बन्धित कानूनों का दुरुपयोग भी नजर आता है। यह भी एक बुरा लक्षण है। इससे जो स्त्री सचमुच में सताई गई है, उसे भी लोग शक की नजर से देखते हैं और उसे न्याय नहीं मिल पाता।

— 17/बी1, हिन्दुस्तान टाइम्स, अपार्टमेंट्स मयूर विहार, फेज–1, दिल्ली–91, मो. :–9718258822

जातिवाद मुक्त समाज बनाने के लिए अन्तर्जातीय विवाह करायें

– अर्जुनदेव चढ्ढा

मानव जीवन के चार स्तम्भों में गृहस्थ जीवन का द्वितीय स्थान है। अन्य तीन आश्रम भी इसी पर आश्रित है। यह एक उत्तरदायित्व पूर्ण आश्रम है। इसी आश्रम में रहते हुए मानव सन्तानोत्पत्ति से लेकर पालन–पोषण, शिक्षा, दीक्षा, विवाह आदि समस्त दायित्वों को पूर्ण करता है। इन दायित्वों में सबसे महत्त्वपूर्ण है – विवाह। यह ऐसा उत्तरदायित्व है जो दो आत्माओं के मिलन का संयोग बैठाता है। न बैठ पाने के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस दायित्व के निर्वहन का जिक्र सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में किया है। उन्होंने वर्णानुकूल सुन्दर लक्षणयुक्त कन्या से विवाह करने का निर्देश दिया है।

जहाँ वर्ण है वहाँ जन्मना जाति नहीं। सत्यार्थ प्रकाश बल देता है कि विवाह गुण–कर्म–स्वभावानुसार होने चाहिए। यदि इस तथ्य पर विचार किया जाए तो पता चलेगा कि आर्यसमाजेत्तर समाजों में विवाह को लेकर अनेक कठिनाइयाँ हैं जैसे जन्मकुंडली का मिलान, मंगला–मंगली का चक्कर, शिक्षा व रोजगार समस्या, खानपान, रहन–सहन, पारिवारिक स्थितियाँ आदि। यद्यपि आज लड़कियों का अनुपात लड़कों से कम है फिर भी लड़की वाले बहुत परेशान हैं। आर्यसमाजेत्तर लोग एक सीमित दायरे में बंधकर, जन्मपत्री मिलाकर अनमेल विवाह कर डालते हैं, जिसका परिणाम होता है आजीवन संघर्ष। इस समस्या से आर्य समाज के लोग भी नहीं बच पाते। वे भी जन्मना जाति के प्रभाव में लड़के–लड़कियों का विवाह स्वजाति में करते हैं जिससे अनेक समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। आर्य समाजी परिवार की लड़की यदि आर्य समाजेत्तर परिवार में जाकर पूरा पौराणिक बन जाती है यदि वह परिवार मांसाहारी है तो वह उससे भी नहीं बच पाती। उसे उसी माहौल में जीने को मजबूर होना पड़ता है। यदि आर्यसमाजी परिवार में आर्यसमाजेत्तर परिवार की लड़की आती है तो आर्य सिद्धान्तों व संस्कारों के अभाव के कारण समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करती है। इससे परिवार में संघर्ष उत्पन्न होता है।

जिनके घरों में युवा लड़के या लड़कियाँ हैं उनके माता–पिता से उनके विवाह सम्बन्धी कठिनाई का पता किया जा सकता है। लड़कियाँ 35–38–40 साल की हो जाती हैं अच्छे वर ढूंढने के चक्कर में उम्र समाप्त हो जाती है यही हाल लड़कों में मिल जायेगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट लिखा है कि 24 वर्ष तक कन्या का विवाह अवश्य हो जाना चाहिए। एक तरफ ऐसा स्पष्ट निर्देश और दूसरी तरफ उन्होंने उल्लेख किया है – ''चाहे लड़का–लड़की मरणपर्यन्त कुमार रहें परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाव वालों का विवाह कभी न होना चाहिए।'' जब लोग जाति के दायरे में सीमित रहेंगे तो निश्चित ही कठिनाईयाँ बढ़ेंगी। ऐसे में युवा युवती का मन भी दूषित हो सकता है।

इस दिशा में विगत चार वर्षों से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया जा रहा युवक–युवती परिचय सम्मेलन एक सराहनीय कदम है। पांचवां युवक–युवती सम्मेलन दिल्ली में 14 जुलाई, 2013 को होने जा रहा है।

आर्य समाज के लोग यदि इस दिशा में सहयोग करें तो बहुत कुछ लड़के–लड़कियों के विवाह सम्बन्धित कठिनाई दूर हो सकती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों पर विचार करें – सज्जन लोग स्वयंवर विवाह किया करें। सो विवाह वर्णानुक्रम से करें और वर्णव्यवस्था भी गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए।

(सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास)

ऋषि के शब्दों में कितनी कल्याणभावना है। वे वर्णव्यवस्था के कितने समर्थक हैं। उन्हीं के शब्दों में – रजवीर्य के योग से ब्राह्मण शरीर नहीं होता। (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास) वे लड़का–लड़की के गुण, कर्म, स्वभाव के मेल पर बल देते हैं। उन्हीं के शब्दों में, ''जब स्त्री–पुरुष विवाह करना चाहें तब विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कुल, शरीर का परिमाण आदि यथायोग्य होना चाहिए। जब तक इनका मेल नहीं होता तब तक विवाह में कुछ भी सुख नहीं होता। (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास) इतना ही नहीं उन्होंने विवाह–सम्बन्ध दूर करने पर बल दिया है। दूरस्थ विवाह में प्रेम की डोरी बढ़ी रहती है। दोनों पक्ष के लोग एक–दूसरे के गुणावगुणों से अनभिज्ञ रहते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में, 'दूरस्थों के विवाह में दूर–दूर प्रेम की डोरी लम्बी बढ़ जाती है। निकटस्थ विवाह में नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास) खान–पान, जलवायु आदि की दृष्टि से भी दूरस्थ विवाह उत्तम है। महर्षि जी के ही शब्दों में, 'दूर देशस्थों के विवाह होने में उत्तमता है। (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास) हम आर्य समाज के लोग ऋषि की भावनाओं और उनकी कल्याणकामना को समझें।

आज विवाह की समस्या इतनी विकट होती जा रही है। जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसका समाधान अन्तर्जातीय विवाह से ही सम्भव है जो गुण, कर्म स्वभाव से गृहीत है। यदि अपनी जाति में विवाह होने पर पति–पत्नी में संघर्ष है वह अच्छा है या अन्तर्जातीय विवाह में गुण, कर्म स्वभावानुसार सुखभोग अच्छा है?विपरीत स्वभाव वालों में विवाह का सर्वथा निषेध है।

महर्षि दयानन्द के शब्दों में 'कन्या को मरने तक चाहे वैसी ही कुमारी रखो, परन्तु बुरे मनुष्य के साथ विवाह न करो।

(उपदेश मंजरी–3)

इस दिशा में हम आर्य समाज के लोग सक्रिय कदम नहीं उठा पा रहे हैं व दुःख झेल रहे हैं। विरोधाभास साक्षात् देख रहे हैं पर साहस नहीं कर पा रहे हैं। हमारा आर्य समाज एक परिवार है। हम एक–दूसरे से भावनात्मक सम्बन्ध से जुड़े हुए हैं। केवल कथनमात्र से कुछ नहीं होता। हमारा कार्य दूसरों के लिए बहुत बड़ा उपदेश है। आचरण और कर्म की भाषा मौन उपदेश देती है। जो प्रभावशाली होती है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा उठाया गया यह कदम निश्चय ही भविष्य में अच्छा परिणाम देगा। रोटी और बेटी का सम्बन्ध आर्य समाज के लिए सुखद भविष्य है। इससे हमारा दायरा विस्तृत होगा। हम एक दूसरे के निकट आयेंगे। हमें संस्कारित लड़के–लड़कियाँ मिलेंगी। परिवार में सुख–शान्ति हो इसके अलावा और क्या चाहिए?हमारी जाति आर्य, हमारा धर्म वैदिक, हमारा राष्ट्र आर्यवर्त, हमारा नाम आर्य, हमारा उपास्य देव ओ३म् यही हो हमारी पहचान। इसे बनाना है। यदि हम लोग परस्पर लड़के–लड़कियों का विवाह करना प्रारम्भ कर दें तो देश में आमूलचूल परिवर्तन आयेगा और जन्मना जाति–पाति मिट जायेगी। इसे मिटाना अति आवश्यक है अन्यथा हम परस्पर विभक्त होते जायेंगे और हमारी राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ जायेगी। इसके लिए अन्तर्जातीय विवाह एक सशक्त माध्यम है।

आर्य समाज आर्यों का समाज है। हम अपने समाज में विवाह सम्बन्ध करें। इससे रुढ़ियाँ मिटेंगी, दिखावा समाप्त होगा, योग्य लड़के–लड़कियों का दायरा बढ़ेगा तो विवाह सम्बन्धी समस्या स्वतः समाप्त हो जायेगी। अमीरी–गरीबी की खाई पटेगी, हमारा परिवार बड़ा होगा, अच्छे सम्बन्धों से मन में प्रसन्नता बढ़ेगी। गृहस्थ जीवन स्वर्ग के समान होगा।

गुरुकुलों के आचार्य/आचार्या से निवेदन है कि वे गुरुकुल के स्नातक/स्नातिका का ऐसा सम्बन्ध बनायें जिससे गुरुकुल के लड़के–लड़कियों का परस्पर विवाह सम्बन्ध हो सके। वे इस दिशा में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। विवाह में विचारों का मेल परमावश्यक है। यदि गुरुकुलीय शिक्षाप्राप्त युवक का अन्य कॉन्वेंट/विद्यालय से शिक्षा प्राप्त पौराणिक लड़की से विवाह होता है तो उसके जीवन में संघर्ष होगा। इसी प्रकार गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त लड़की का विवाह यदि कान्वेंट विद्यालय से शिक्षा प्राप्त लड़कों से होगा तो उसके भी जीवन में संघर्ष होगा। कारण यह है कि गुण, कर्म, स्वभाव मेल नहीं खाते हैं। वैदिक विचारधारा का अधिकाधिक प्रचार–प्रसार हो, इसलिए यह विवाह सम्बन्ध वैदिक विचारों के अनुरूप होना चाहिए।

आर्य समाज को आदर्श समाज बनायें। योग्य स्त्री–पुरुषों से योग्य आदर्श समाज बनेगा जिसका माध्यम अन्तर्जातीय विवाह है। मेरे सामने कितने अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हुए हैं और वे युवक–युवती सुखद जीवन व्यतीत कर रहे हैं और कितने ऐसे जातीय विवाह हुए हैं जिनके मध्य संघर्ष है। जन्मकुण्डली, मंगला–मंगली, राशि ग्रह, मुहूर्त, शुभवाद, अच्छा–बुरा दिन, नाड़ी मेल, सबको तिलांजलि देकर समाज के समक्ष सत्य को प्रतिष्ठापित करना होगा। यह युग की माँग है।

विशेष निवेदन

जिसके भी घर में विवाह योग्य युवक–युवतियाँ हैं वे परिचय सम्मेलन हेतु रजिस्ट्रेशन अवश्य करावें। इससे योग्य लड़के–लड़कियों का प्रमिलन होगा। यदि सम्मेलन में नहीं जा सकते तो कम से कम बायोडाटा भेजकर वैवाहिक पुस्तिका द्वारा सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। आर्य समाज एक सकारात्मक कदम की ओर अग्रसर होगा। आर्यों से निवेदन है कि वे इस दिशा में पहल करें। यह ऐतिहासिक कार्य होगा। कहने से कुछ नहीं, सिर्फ करने से होगा। यदि हम महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो अन्तर्जातीय विवाह को स्वीकार करना होगा। इससे एक बहुत बड़ी सामाजिक क्रान्ति आयेगी। इस क्रान्तिवादी आन्दोलन में सहयोग दें। स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों को साकार करें। विवाह को सहज, सुखद बनायें संघर्षमय नहीं। यह आर्य समाज की अन्तरात्मा की आवाज है।

प्रधान, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा

विद्यार्थियों के मध्य में हिन्दी–संस्कृत को चाहने वाले बहुत कम

– शास्वती दास

नई दिल्ली : जब अधिकतर विश्वविद्यालय के कॉलेज चौथी निर्धारित सूची के अन्तर्गत विषयों में प्रवेश बन्द कर चुके हैं, तब बहुत से कॉलेजों में हिन्दी और संस्कृत में प्रवेश अब भी खुले हुए हैं।

जबकि डी. यू. चाहने वालों ने प्रथम और द्वितीय निर्धारित सूची के अन्तर्गत अंग्रेजी हेतु सुगम रास्ता बनाया, हिन्दी और संस्कृत को कम महत्त्व मिला।

कुछ हद तक तो स्कूलों की विषय सूची में विषय का न होना उत्तरदायी है। कमला नेहरू कॉलेज की संस्कृत प्रोफेसर सरिता शर्मा का कहना है कि ''विशेष रूप से दिल्ली के स्कूलों की 11 व 12वीं कक्षा में संस्कृत नहीं पढ़ाई जाती, इसलिए अगर छात्र 10 के बाद उस विषय को नहीं पढ़ता है तो उसे स्कूल से सम्बन्ध तोड़ना पड़ता है। दूसरे सेवा बाजार में यह विषय अधिक प्रभावशाली नहीं है। यह मनः स्थिति सामान्य अनिच्छा का कारण है। तीसरे यह समझने (पढ़ने) के लिए आसान विषय नहीं है।''

फिर भी अध्यापकगण का कहना है कि उच्च स्तर पर भी विषय (हिन्दी, संस्कृत) को पढ़ने पर भी बहुत से अच्छे अवसर हैं। प्रो. सरिता शर्मा ने कहा कि जो छात्र 12वीं कक्षा में 70 प्रतिशत या अधिक अंक पाते हैं उनको दिल्ली संस्कृत एकेडमी और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान छात्रवृत्ति प्रदान करते हैं। इससे भी अधिक जो छात्र स्नातक की परीक्षा विशेषता के साथ उत्तीर्ण करते हैं उनके लिए भारत और विदेश में बहुत अवसर हैं, क्योंकि अमेरिका (यू. एस. ए.) के कई विश्वविद्यालय, संस्कृत में शोध करने हेतु अनेक अवसर प्रदान करते हैं।

अधिकारी/कर्मचारी भी कहते हैं कि विश्वविद्यालय भी इन विषयों (हिन्दी, संस्कृत) को पढ़ने को हतोत्साहित करते हैं और भविष्य के अवसरों के अभाव का प्रचार करते हैं। डी. यू. के एक उच्च अधिकारी ने कहा कि जो छात्र हिन्दी और संस्कृत पढ़ते हैं उनके लिए अत्यधिक अवसर हैं और हम उन्हें उत्साहित करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

– हिन्दुस्तान टाइम्स अंग्रेजी, 9 जुलाई से साभार

Shaswati Das , e-mail :- shaswati.das@hindustantimes.com

अमरनाथ में लूटखसोट

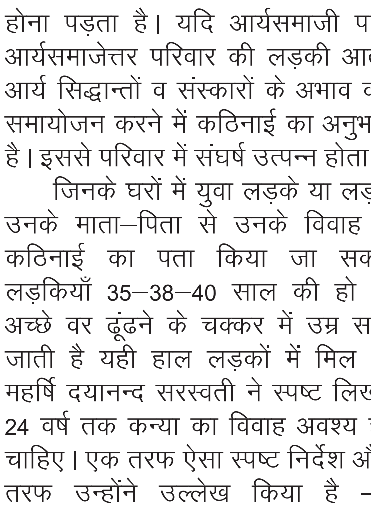

स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि अमरनाथ में भी धर्म के नाम पर खूब लूटखसोट हो रही है, अमरनाथ शिवलिंग कोई शिवलिंग न होकर जल स्राव के बर्फ में जमने की एक साधारण सी प्राकृतिक प्रक्रिया है, अंधविश्वास में लोग इसकी पूजा करते हैं और इससे फायदा कमाने वाले इसे तरह–तरह से बढ़ावा दे रहे हैं, उन्होंने कहा कि लोगों को धर्म के विषय में तार्किक दृष्टि रखना चाहिए।

– लोकमत समाचार, नागपुर से साभार

"भीड़ मर गयी गैलीलियो नहीं मरा"

— हिमांशु कुमार

श्री हिमांशु कुमार के पड़दादा श्री बिहारी लाल शर्मा महर्षि दयानंद के शुरूआती शिष्यों में से थे। महर्षि दयानंद मुजफ्फरनगर (उ0प्र0) उनके घर पर ठहरा करते थे। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्वप्रथम मंत्री थे श्री बिहारीलाल शर्मा। स्वयं वे ब्राह्मण थे पर ब्राह्मणवाद के विरोधी थे और इसीलिये ब्राह्मणवादियों ने उन्हें ज़हर दे दिया था। उनके ताऊजी (पिता के भाई) श्री ब्रह्मप्रकाश जी, श्री जयप्रकाश नारायण, श्री जवाहरलाल नेहरू, आचार्य नरेन्द्रदेव, चौ0 चरणसिंह आदि के साथ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे पर पेंशन लेने से मना कर दिया। स्वयं हिमांशु कुमार जी ने श्रीमती वीनाजी के साथ विवाह के तुरंत पश्चात् छत्तीसगढ़ के दन्तेवाड़ा में एक आश्रम बनाकर आदिवासियों के प्रति हो रहे अन्याय एवं शोषण के विरूद्ध संघर्ष किया और 1992 से लेकर 2010 तक जवानी के 18 वर्षों में लाखों आदिवासियों के साथ काम किया। 2009–10 में छत्तीसगढ़ सरकार प्रेरित सलवा जुडूम ने उनके आश्रम को जलाकर ध्वस्त कर दिया और हिमांशु कुमार को जान से मारने का प्रयास किया। तब से वे दिल्ली में रहकर अपने समाज परिवर्तन के कामों को आगे बढ़ा रहे हैं। प्रस्तुत है उनके ब्लॉग से लिया गया एक क्रांतिकारी विचार :–

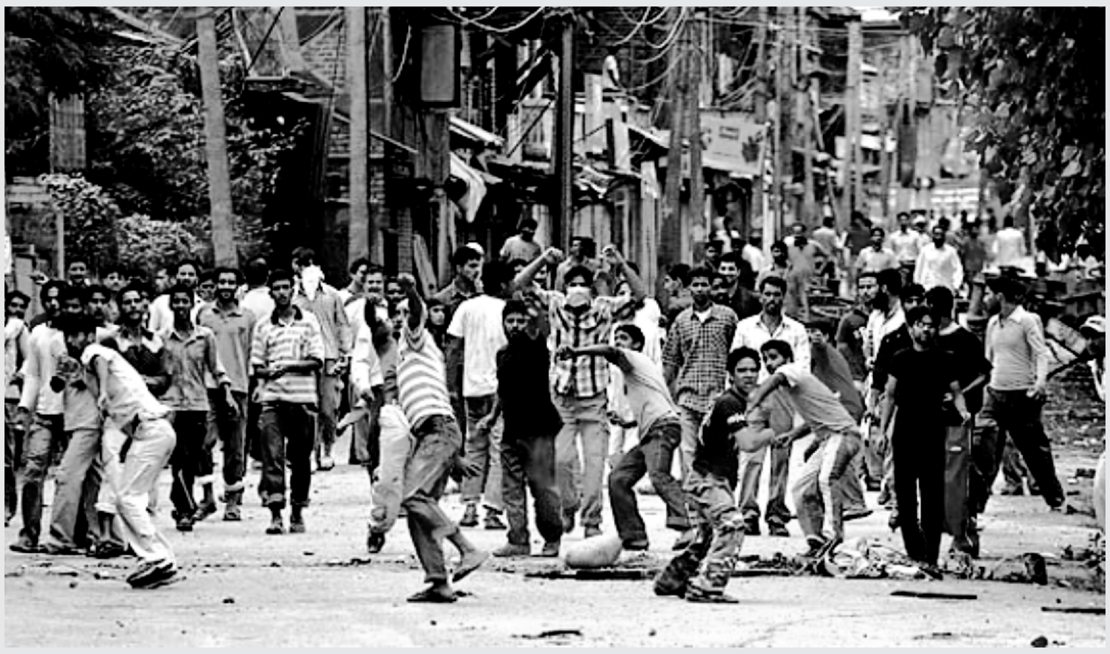

हम सब को बहुत गुस्सा आता है जब हम पढते हैं कि किस तरह क्रूर ईसाई धर्मान्धों ने गैलीलियो को जिन्दगी भर जेल में सड़ा दिया! गैलीलियो का गुनाह क्या था?उसने सच बोला था! उसने कहा था कि सूर्य पृथ्वी के चारों तरफ नहीं घूमता बल्कि पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ घूमती है! जबकि धर्मग्रन्थ में लिखा था कि पृथ्वी केन्द्र में है और सूर्य तथा अन्य गृह उसके चारों तरफ घुमते हैं! गैलीलियो ने जो बोला वो सच था ! धर्मग्रन्थ में झूठ लिखा था! इसलिए धर्मग्रंथ को ही सच मानने वाले सारे अंधे गैलीलियो के विरुद्ध हो गये! गैलीलियो को पकड़ कर मुकदमा चलाया गया! अदालत ने सत्य को अपने फैसले का आधार नहीं बनाया! अदालत भीड़ से डर गयी! भीड़ ने कहा यह हमारे धर्म के खिलाफ बोलता है इसे जिंदा जला दो! अदालत ने फैसला दिया इसे जिन्दगी भर जेल में सड़ा दो क्योंकी इसने लोगों की धार्मिक आस्था के खिलाफ बोला है! सत्य हार गया आस्था जीत गयी! जिन्दगी भर जेल में सड़ा दिया गैलीलियो को, सत्य बोलने के कारण!

आज भी जब हम ये पढते हैं तो सोचते हैं कि काश तब हम जैसे समझदार लोग होते तो ऐसा गलत काम न होने देते! लेकिन अगर मैं आपको बताऊँ कि ऐसा आज भी हो रहा है और आप इसे होते हुए चुपचाप देख भी रहे हैं तो भी क्या आप में इसका विरोध करने का साहस है?आप अपनी तो छोडिये इस देश के सर्वोच्च न्यायालय में भी ये साहस नहीं है! न्यायालय के एक नहीं अनेकों निर्णय ऐसे हैं जो सत्य के आधार पर नहीं धर्मान्ध भीड़ को खुश करने के लिए दिये गये हैं!

पहला उदाहरण है अमरनाथ के बर्फ के पिंड को शिवलिंग मानने के बारे में स्वामी अग्निवेश के बयान पर उन्हें सर्वोच्च न्यायालय की फटकार !दो दो जिला अदालतों द्वारा अग्निवेश के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिये गये! वो बेचारे जमानत के लिए भटकते घूमे! स्वामी अग्निवेश ने कौन सी झूठी बात कही। भाई! क्या ये विज्ञान सम्मत बात नहीं है कि उस तापमान पर अगर पानी टपकेगा तो पिंड के रूप में जम ही जायेगा! अगर डरे हुए करोडों लोग उस पिंड को भगवान मानते है तो इससे विज्ञान अपना सिद्धांत तो नहीं बदल देगा ! या तो बदल दो बच्चों की विज्ञान की किताबे !या फिर कहने दो किसी को भी सच बात! उन्हें इस सच को कहने के लिए पीटा गया! उनकी गर्दन काट कर लाने के लिए एक धार्मिक संगठन ने दस लाख के नगद इनाम की घोषणा कर दी! कोई राजनैतिक पार्टी इस बात के लिए नहीं बोली ! सबको इन्ही धर्मान्धों के वोट चाहिए !सबसे ज्यादा गुस्से की बात ये है कि इसी युग में, इसी साल इसी मामले पर इसी देश के सर्वोच्च न्यायालय ने इस मामले पर स्वामी अग्निवेश को फटकार लगाई!

भयंकर स्थिति है! सच नहीं बोला जा सकता! विज्ञान बढ़ रहा है! विज्ञान का उपयोग हथियार बनाने में हो रहा है! विज्ञान की खोज टीवी का इस्तेमाल लोगों के दिमाग बंद करने में किया जा रहा है! लोगों को भीड़ में बदला जा रहा है! भीड़ की मानसिकता को एक जैसा बनाया जा रहा है! जो अलग तरह से बोले उसे मारो या जेल में डाल दो! अलग बात बोलने वाला अपराधी है! सच बोलने वाला अपराधी है!

ये मस्जिदें तोड़ने वाली भीड़ ये दलितों की बस्तियां जला देने वाली भीड़ ये आदिवासियों को नक्सली कह कर उनका दमन कर उनकी जमीने छीनने वाली भीड़ जो दंतेवाडा से अयोध्या तक फैली है , वही भीड़ संसद और सर्वोच्च न्यायालय में दाखिल हो गयी है! वो कुर्सियों पर बैठ गयी है! वो सोनी सोरी मामले में अत्याचारी पुलिस का साथ दे रही है! वो गुजरात में मोदी का साथ दे रही है! वो तर्क को नहीं मानेगी , इतिहास को नहीं मानेगी!

ये भीड़ राजनीति को चलाएगी! विज्ञान को जूतों तले रौंद देगी! कमजोरों को मार देगी !और फिर ढोंग करके खुद को धार्मिक, राष्ट्रभक्त और मुख्यधारा कहेगी!

मैं खुद को इस भीड़ के राष्ट्रवाद, धर्म और राजनीति से अलग करता हूँ! मुझे इसके खतरे पता हैं! पर मैंने इतिहास में जाकर मरते हुए गैलीलियो के साथ खड़े होने का फैसला किया है! मुझे पता है मेरा अंत उससे ज्यादा बुरा हो सकता है! पर देखो न भीड़ मर गयी गैलीलियो नहीं मरा!

273, सैक्टर–19, पॉकेट–2,
अमराही गाँव के पास
द्वारका, दिल्ली–110075
मो.:–09013893955
e-mail: -
vcadantewada@gmail.com

मजदूरों को मिले आयोग का लाभ

चुनाव तक गर्मायेंगे मुद्दा : स्वामी अग्निवेश

जाने माने सामाजिक कार्यकर्ता व बंधुआ मजदूर मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश ने कहा है कि राष्ट्रीय वेतन आयोग गठित कर मजदूरों के हित के उपाय किए जाने चाहिए। उनका कहना है कि खेतों में काम करने वाले मजदूरों को भी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी की तरह वेतन आयोग का लाभ मिलना चाहिए। मजदूरों के मसले पर वे जनप्रतिनिधियों से बात करेंगे और लोकसभा चुनाव तक इसे राष्ट्रीय मुद्दा बनायेंगे।

राष्ट्रीय न्यूनतम वेतन अभियान समिति के तहत 30 जून (रविवार), 2013 को सर्वोदय आश्रम में मजदूर नीति पर चर्चा सत्र हुआ। चर्चा सत्र के बाद स्वामी अग्निवेश पत्रकारों से बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मजदूरों के हितों के संरक्षण के लिए सरकार उपाय योजनाओं के दावे तो करती है लेकिन मजदूरों को असहाय ही रहना पड़ रहा है। न्यूनतम वेतन नहीं पाने वाले मजदूरों को बंधुआ मजदूर कहा जाता है। देश में स्थिति यह है कि कई मजदूर बंधुआ की श्रेणी में ही काम कर रहे हें। देश में असंगठित क्षेत्र में 45 करोड़ मजदूर हैं। बाल मजदूरों की संख्या भी 5 करोड़ से अधिक है। देश की आबादी का बड़ा हिस्सा श्रम शोषण का शिकार हो रहा है। 6वें वेतन आयोग के तहत तृतीय श्रेणी कर्मचारी को 25 हजार रुपये व चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी को 16 हजार रुपये प्रतिमाह वेतन मिलता है। मजदूरों को भी वेतन आयोग के तहत मजदूरी मिलनी चाहिए। इस दिशा में सरकार को व्यापक दृष्टि के साथ प्रारूप तैयार करके उसे शीघ्र अमल में लाना चाहिए। मजदूरी नीति अभियान के तहत केन्द्रीय स्तर पर कमेटी बनाई गई है। राज्य स्तर पर भी कमेटियां बनाई जायेंगी। कमेटी के कार्यकर्ता सांसद व विधायक से मिलेंगे और मजदूर नीति के सम्बन्ध में ज्ञापन सौंपेंगे। सरकारी नीतियों में संशोधन पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि गरीबों को शिक्षा नीति का समुचित लाभ नहीं मिल पा रहा है। निजी शिक्षा पर नियंत्रण नहीं है। धारा 47 के तहत देश में शराब बन्दी होना चाहिए। सरकार राजस्व संकट का हवाला देते हुए शराब बंदी लागू करने से इनकार करती है। गुजरात में वहाँ की सरकार ने राजस्व के लिए शराब बिक्री की परवाह नहीं की। फिर भी वहाँ विकास कार्य हुए। देश में अल्कोहल नीति का न होना गंभीर बात है। पत्रकारों से चर्चा के दौरान सुभाष लोमटे, डॉ. रूपा ताई कुलकर्णी, विलास भोंगाड़े, नितीन पवार व अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर, नागपुर से साभार

पृष्ठ–1 का शेष

ड्रग्स के खिलाफ यात्रा में स्वामी आर्यवेश जी तथा जनसमूह का एक दृश्य

purpose of Man's journey on Earth and how one's physical journey has a distinct emotional and spiritual element to it. Swamiji's proficiency both in English and Hindi enabled him to engage with a large audience.

In his final message, Swamiji appealed to the Samaj to work with a unified purpose. He stated that South Africa was unique in that the Arya Samaj was essentially united. He encouraged that this unity was an important element in ensuring that the work of the Samaj, especially the social activism aspect, could gain momentum.

सभा प्रधान श्रीमती उषा देसाई व माता गायत्री के साथ स्वामी आर्यवेश जी

International Relations

In the significant discussion with the local leadership of the Samaj, Swamiji shared his concerns with the International Arya Samaj Movement. Despite the legal impasse in India, the international image of the Samaj was intact. He described the immense respect Swami Agnivesh enjoyed internationally, citing his engagement with Middle Eastern countries, the Pope and other international religious leaders. Aryaveshji also felt that South Africa had an important role to play in this respect. He urged the local leadership to engage with the international Arya Samaj community so that common ideas and challenges could be discussed. Among the many ideas discussed the following were important:

1. Arya Samaj South Africa (International Vedic Conference Nov-Dec 2013)

Swamiji shared that this would be a wonderful opportunity for the international Arya Samaj community to meet and share ideas. In addition, the conference had the potential to seek resolutions to some of the challenges that faced religious leaders. He said that he felt assured that proposed conference will be a catalyst for a new and dynamic vision for the Samaj, especially in the international arena.

2. International Youth Camp

It was also decided that an International Youth Camp be convened in South Africa soon after the conference. This would be an ideal opportunity to develop the next generation of leadership in the Samaj. Swamiji proposed that Archarya Dikshanderji and Pooja Vedalankar should assume the leadership of this initiative. There was unanimous support for this.

3. International Yoga Outreach

Following a very successful Yoga demonstration by Archarya Dikshender, Mr Nirode Bramdaw, a Samaj leader in Durban, has kindly agreed to develop an International Ashtanga Yoga Outreach Programme in conjunction with Swami Aryaveshji and Archarya Dikshanderji. The premise behind the idea was to create a lifestyle product that would appeal to the international community while at same time becoming a conduit for the values and ideals of the Arya Samaj to be propagated. Mr Bramdaw will meet with Archarya Dikshanderji in India at the end of June 2013 to develop the product. The idea is to launch the programme on a wide scale with eventually having an international television footprint.

4. India South Africa House

There is a recommendation that AYS develops and submits a proposal to the Ministry of Overseas Indian Affairs to convert Swami Bhavanidayal's house in Ajmer, India into an international Arya Samaj Museum with Swami Aryavesh being one of the trustees of the property.

5. International Media Centre

Swamiji and the South African local Arya Samaj members (AYS) agreed that such a centre was imperative and that it would be a wise investment for the propagation of Arya Samaj philosophies. It would also serve as an international resource centre for Vedic thought and literature.

Under international relations, the local South African Arya Samaj community felt that it would be prudent for Swami Aryavesh to visit South Africa regularly to give impetus to the various initiatives planned for the future.

Social Activism

Swamiji spent much of his time discussing and engaging with the local community on the need for ongoing social activism. He reiterated that spiritual growth was not an insular phenomenon, but rather a growth that depended upon collective benefit. While he applauded the various initiatives against drug and alcohol abuse and the success achieved, he also warned against complacency. In his presence the Arya Samaj Renaissance group resolved to actively oppose violence against women. As such four marches have been planned for the rest of the year focussing on violence against women and children – billed as the 1000 People March – where the issue of violence against women and children will be highlighted.

Arya Samaj Renaissance Group

During Swamiji's last visit a committee of people was established to drive some of the initiatives started by Swamiji. The position was that this committee would supplement the work done by Arya Samaj South Africa focusing on specific objectives. In the annual review the following prevailed:

1. *The committee is loosely referred to as the Arya Samaj Renaissance Group working under the auspices of Arya Samaj, South Africa.*
2. *The committee has met religiously, once a month planning and executing various programmes.*
3. *The focus areas included:*
   a. *Position Papers on a wide range of*

आर्यन रेनेसान्स ग्रुप के साथ स्वामी आर्यवेश जी तथा ब्र. दीक्षेन्द्र जी

प्रवासी की आत्मकथा का विमोचन करते हुए स्वामी आर्यवेश जी

relevant topics such as the relevance of the Vedas in the 21 century to same sex marriages.

b. Planning and executing social activism programmes

c. Responding to national and international issues – especially in the media

d. Developing an electronic database of all Arya Samaj followers and like minded thinkers. Once a week a quotation from the Vedas reach the cell phone of people on the data base.

e. Planning workshops and symposiums

4. By and large the initiatives of the group have been successful with the potential for increased outreach.

स्वामी आर्यवेश जी के साथ प्रसिद्ध भजनोपदेशिका बहन वीणा लक्ष्मण तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति

Religious Unity

One of important aspects Swamiji presented was the need for the Samaj to assume leadership of religious unity in the South African context. He alluded to the world wide crises that religious leaders faced and that there was a need for dynamic and visionary leadership from grassroots level to the international platform. The need for inter-religious dialogue was important to prevent communalism and religious bigotry. The focus should start with unity within the Hindu fold and then gravitating to other religions.

Swamiji also felt that South Africa should also be aware of religious fundamentalism. While this was not an apparent immediate threat, the world wide rise in fundamentalist attitudes meant that its influence could at some time or the other affect South Africa.

On the issue of the threat of conversion to other religions, Swamiji reiterated that we needed to introspect first as to why would people leave Hinduism to other faiths and deal with the causes rather than the symptoms. He also alluded to the need for Hinduism to become so attractive that people would want to join Hinduism rather than leave. Many westerners were in fact looking towards the values and teachings of Hinduism for their own respective peace of mind. Hinduism needed to be simple and relevant, while at the same time offer spiritual comfort.

Social Cohesion

At Newcastle, Swamiji concentrated on the need for social cohesion. He said that while it was true that each individual had his or her own specific needs, it was impossible for human being to exist alone. By his very nature, man was a gregarious being and thrived on social interaction. At this venue, Swamiji spoke on the spirituality and social cohesion.

He defined social cohesion as the unity of man and the many elements he engages with. The journey commenced from striking a balance and being at peace with himself to permeating this peace to all who he comes into contact with. From this individual balance comes peace around the environment and so the circle grows.

Within the international context he reflected on the need for the nations of the world to come together and engage in solutions to climate change, terrorism, consumerism, corruption, mutual respect, and respect for sovereignty. On the local level he appealed for people to purge themselves of prejudice and see the whole of mankind as one human family "Vasudhaiva Kuntumbakum". Poojya Swami Aryaveshji emphatically advocated that the Samaj's strength was not in large numbers but rather a small band of dedicated activists who selflessly and consciously promoted the maxim " Vasudhaiva Kutumbakum" (the whole world was one family) while at the same time campaigned dedicatedly for the eradication of all forms of social injustices. His claim that no true Arya Samaj activist should fight against social evils received spontaneous accolades. In particular, his presentation of the "Sapth Kranthi" initiative where he strongly motivated the community to challenge and fight against all forms of discrimination (Race, Caste and Creed), Injustices against Women, Alcohol and Substance Abuse, Blind Faith and Dogmatism, Violence and Communalism, Corruption and human exploitation and trafficking. These evils, he said, were eroding morality in communities worldwide and that there should be a concerted, conscious and developmental programme in all countries to fight against them. He further stated that these social evils cannot be fought by the governments of the time alone, but needed the commitment of religious leaders of all faiths as all communities were affected.

Youth

Swamiji noted that this time around there was greater youth participation and applauded the AYS for this initiative. He urged the Samaj to continue engaging with young people so that the Samaj leadership of the next generation would be ready to take up any challenge that may prevail in the future.

Conclusion

Poojya Swami Aryaveshji's visit to South Africa was a phenomenal success, so much so that people are anticipating his next visit. His ability to engage with people of all levels really drew him close to his audiences. One of the more important aspects of this visit was that he was able to develop closer relationships with many of the Arya Samaj activists in South Africa – from both the organised sector as well as the general community. This time he also engaged with members of other communities where he was warmly received and more importantly, his thoughts and ideals were readily accepted.

The challenge was now to continue the work started, giving importance and emphasis to the many challenges that prevail. We need to set a time frame of two years to ensure that we fulfil the objectives we have before us.

Once again, the Arya Samaj community in South Africa and especially the membership of the Arya Yuvuk Sabha are deeply indebted to Swamiji and Archarya Dikshenderji for their time, knowledge and wisdom. Their presence in South Africa was truly a breath of fresh air – bringing in winds of change that would make a positive and collective difference to all who live in South Africa.

Rajish Lutchman

ड्रग्स के खिलाफ यात्रा का नेतृत्व करते हुए स्वामी आर्यवेश जी

स्वास्थ्य चर्चा

योग एवं भोजन

— आई.डी. सागटा

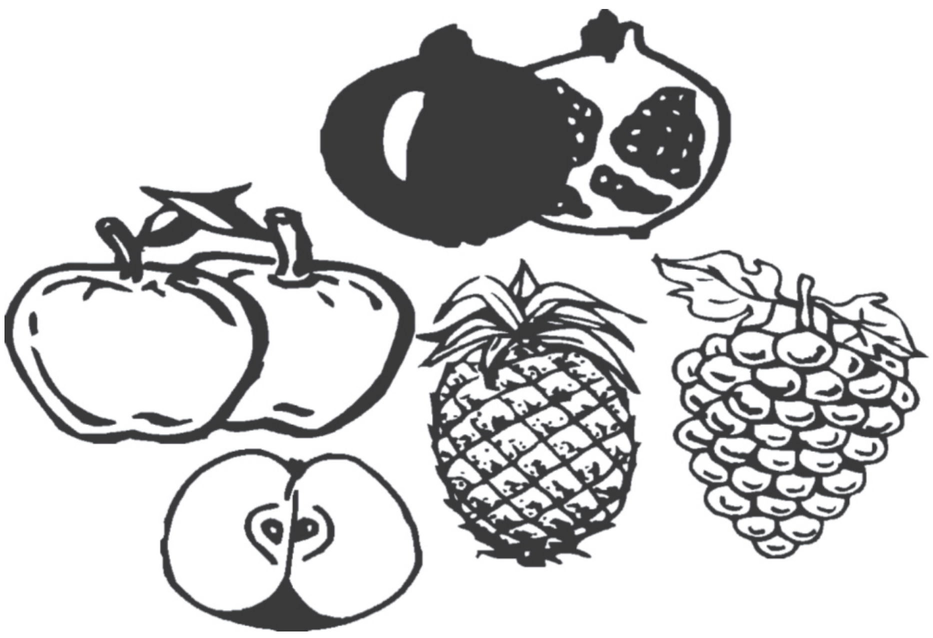

योग पद्धति में आहार का प्रमुख स्थान है। कहा जाता है, ''जैसा खाओ, वैसा बनो'' भोजन के प्रकार तथा गुणों का प्रभाव व्यक्ति की शारीरिक तथा मानसिक दशाओं पर पड़ता है। इसलिए जो व्यक्ति युक्त आहार नहीं लेता तथा जो आहार के सिद्धान्तों की सही समझ नहीं रखता, वह धीरे–धीरे शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से अपनी हानि करने लगता है। वह अपनी आकृति, व्यवहार, विचार तथा कर्म पर भी भोजन की गलत आदतों के बुरे प्रभावों का अनुभव करने लगता है।

योग में भोजन को तीन भागों में बांटा गया है– राजसी, तामसी तथा सात्विक। राजसी भोजन में अनेक प्रकार के भोज्य, मिष्ठान तथा पेय पदार्थ आते हैं जो योगाभ्यासियों के लिये अवांछनीय समझे जाते हैं। इससे शरीर का वज़न तथा चर्बी बढ़ जाती है, भोजन के बाद देर तक शरीर में भारीपन रहता है, और वासनायें भी उमड़ती हैं।

भोजन का दूसरा वर्ग तामसी है जिसमें उत्तेजक पदार्थो का समावेश है। योगाभ्यासियों के लिए ऐसे भोजन भी अवांछनीय हैं।

सात्विक भोजन में मसालों का कोई स्थान नहीं और न ही भोजन को स्वादिष्ट बनाने का ही कोई विशेष आयोजन किया जाता है। यह भोजन ताजा, आकर्षक तथा पौष्टिक होता है किन्तु इसे सरल ढंग से तैयार किया जाता है। इस प्रकार का भोजन योगाभ्यासियों के लिए अत्यधिक अनुशंसित है।

वस्तुतः मूल रूप से कोई भी भोजन राजसी, तामसी या सात्विक नहीं होता। उसके बनाने के ढंग से ही उन्हें वर्ग में रखा जाता है। भोजन का अपना कोई वर्ग नहीं। यह लोगों की सामान्य धारणा है कि सामिष भोजन तामसी होता है और निरामिष भोजन सात्विक। किन्तु यह गलत है। योग में कैलोरी की गणना के आधार पर भोजन का मूल्यांकन नहीं किया जाता। इसके विपरीत, भोजन के गुण तथा खाने के ढंग पर विशेष

ध्यान दिया जाता है। भोज्य पदार्थ में जितना गुण होगा, वह उतना ही शक्तिप्रद समझा जायेगा। भोजन के मुख्य सिद्धान्त निम्न प्रकार के होते है :

संतुलित आहार—संतुलित आहार ग्रहण करना सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। चावल रोटी एवं दाल के अतिरिक्त, संतुलित भोजन होते हैं १. सलाद २. ताजा तरकारियां ३. ताजा फल ४. कड़े छिलके वाले फल।

१. सलाद—जिन तरकारियों को कच्चा खाया जाता है वे सलाद के अन्तर्गत आते हैं। सलाद बनाने के लिए खीरा, ककड़ी, टमाटर, गाजर, चुकन्दर पत्तेदार गोभी आदि का प्रयोग होता है। सलाद खाने का आदर्श समय दिन तथा सायं के भोजन के पूर्व का है।

२. ताजा तरकारियां—सब्जियों को जहाँ तक हो ताजा ही खाना चाहिए। ताजा सब्जियों को, चाहे वे जमीन के भीतर उपजती हों या बाहर, प्रतिदिन एक निश्चित मात्रा में अवश्य खाना चाहिए। उन्हें सात्विक ढंग से पकाना चाहिए।

३. ताजा फल—योगाभ्यास के अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए ताजा फल अनिवार्य हैं। यह आवश्यक नहीं कि अधिक मूल्यवान फल ही खाये जायें, जो फल आसानी से मिल सकें उन्हीं से काम चल सकता है। फलों को मिला कर भी खाया जा सकता है। मौसम अनुसार जो भी फल उपलब्ध हो लिया जा सकता है। प्रश्न यह है फल कितना लिया जाये। एक व्यक्ति के लिए एक सेब, एक नारंगी या एक केला प्रतिदिन पर्याप्त है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए नियमित रूप से फल खाने चाहिएँ।

४. कड़े छिलके वाले फल—कड़े छिलके वाले फलों में काजू, पिस्ता, कागजी बादाम तथा अखरोट खाना अच्छा है। इन सूखे फलों को मिलाकर एक मुट्ठी खाना पर्याप्त है। ये फल ऊष्ण व प्रभावकारी हैं। अतः उन्हें जाड़ों में ही लेना चाहिए। कड़े छिलके वाले फल प्रोटीन, खनिज तथा विटामिनों से पूर्ण होते हैं।

भोजन के कुछ और सिद्धान्त भी हैं जिनका पालन करना अत्यावश्यक है:–

भोजन की मात्रा—भोजन अपनी क्षमता के ८५ प्रतिशत से अधिक न खायें। जब पूरी क्षमता से कम भोजन किया जाता है तब भोजन आसानी से पच जाता है तथा शरीर खाये हुए पदार्थो का पूर्ण उपयोग कर लेता है। इसके विपरीत जब काफी अधिक मात्रा में भोजन कर लिया जाता है तब यह समुचित रूप से पचता ही नहीं तथा इसका पूरा उपयोग नहीं हो पाता। इसके कारण पाचन संस्थान पर विशेष रूप से तथा शरीर पर सामान्य रूप से तनाव बढ़ जाता है। इससे शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों का कार्यकलाप अवरूद्ध हो जाता है। अधिक भोजन के कारण अनावश्यक वजन भी बढ़ जाता है।

खाने का ढंग—भोज्य पदार्थ को धीरे–धीरे और खूब चबाकर खाना चाहिए। अधिक वजन वाले व्यक्ति सामान्य रूप से अनेक गलतियाँ करते हैं। वे तेजी से भोजन करते हैं। उन्हें चबाकर खाने से भोज्य वस्तु अरुचिकर व नीरस लगती है। वे अनियमित समय पर भोजन अथवा अन्य खाद्य पदार्थो का सेवन करते ही रहते हैं। योग पद्धति में इस प्रकार से भोजन के बुरे प्रभावों का विचार करते हुए धीरे–धीरे चबाकर खाने पर अत्यधिक बल दिया गया है। जब भोज्य पदार्थ के साथ लार का मिश्रण अच्छी तरह हो जाये तभी भोजन निगलना चाहिए। जब भूख अच्छी लगी हो तभी खाना चाहिए। भोजन करते समय चित्त भोजन की ओर एकाग्र होना चाहिए। जब तक पहले ग्रास को पूरी तरह चबा न लिया जाये, दूसरा ग्रास मुख में नहीं डालना चाहिए। चबा–चबा कर खाने से भोजन की कम मात्रा से ही व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

भोजन का समय—सोने से न्यूनतम दो घण्टे पहले भोजन कर लेना चाहिए। इस प्रकार भोज्य वस्तु को शरीर अच्छी तरह आत्मसात् कर लेता है। पेट भारी नहीं रहता था सोते समय गहरी नींद आती है और विश्राम भी मिलता है। भोजन चौबीस घण्टों की अवधि में चार बार करना चाहिए इसका अर्थ है कि प्रातः काल जलपान, दोपहर में भोजन, दोपहर के बाद हल्का जलपान तथा सायंकाल भोजन।

जल—सामान्यतया सभी को लगभग दस बारह गिलास प्रतिदिन जल पीना चाहिए। परन्तु भोजन के समय अथवा भोजन के साथ जल नहीं पीना चाहिए। भोजन के एक घण्टे पूर्व अथवा बाद में पीना चाहिए। योगाचार्यो का मत है कि भोजन के साथ जल न पीने से त्वचा सम्बन्धी अनेक रोग और अव्यवस्थायें ठीक हो जाती हैं तथा पर्याप्त जल पीने की प्रशंसा की गई है। यह मान्यता है कि जल से शरीर एवं संस्थान की अशुद्धियां धुल जाती हैं। योगाभ्यासियों को चौबीस घण्टों में दस बारह गिलास या उससे अधिक ताजा जल पीना चाहिए।

चाय काफी—अधिक चाय तथा काफी पीना हानिकारक सिद्ध होता है। इन दोनों पेयों से मलावरोध 'कब्ज', अनिद्रा, स्नायु संस्थान का तनाव और ऐसी ही अन्य दूसरी आंतरिक अव्यवस्थायें उत्पन्न हो जाती हैं तथा त्वचा का स्वाभाविक रंग भी विकृत हो जाता है। चेहरे के तन्तुओं पर रूखापन भी आ जाता है।

मद्यपान—सभी मादक पेयों को 'विटामिनों का चोर' कहा गया है। वे शरीर के पौष्टिक तत्वों को चुराकर नष्ट कर देते हैं। इसलिए योगाभ्यासियों को इनका सेवन वर्जित है।

अंकुरित अनाज—एक मुट्ठी अंकुरित अनाज जैसे, चना, मूँग व अन्य दालें नियमित रूप में लेना स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभकारी है।

योग एवं भोजन के विषय में अनुशंसाओं का सारांश बताते हुए यह कहा जाता है कि आहार के विषय में योग सिद्धान्त इतने सरल हैं कि योगाभ्यासियों को इनका पालन करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। यदि इन सिद्धान्तों का ठीक से पालन हो तो निश्चय ही स्वास्थ्य ठीक रहेगा। संतुलित भोजन एवं योग का नियमित अभ्यास रखने से व्यक्ति की यथोचित आकृति तथा शक्तिपूर्ण स्वास्थ्य का विकास होता है।

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

भ्रष्टों को दंड देने का सबक कोई चीन से सीखे

— सुरेन्द्र किशोर

चीन के पूर्व रेल मंत्री को फांसी की सजा की खबर यहाँ जिसने भी सुनी और देखी, उसने यही कहा कि ऐसा हमारे देश में क्यों नहीं होता?इस देश में करीब–करीब हर स्तर पर सरकारी भ्रष्टाचार से पीड़ित जनता चीन की अदालत के इस फैसले से खुश नजर आए तो यह स्वाभाविक ही है।

चीन के पूर्व रेलमंत्री लिऊ झिजुन को भ्रष्टाचार के आरोप में मौत की सजा मिली है। उनकी सारी संपत्ति जब्त करने का आदेश दिया गया और उन्हें राजनीतिक अधिकार से भी वंचित कर दिया गया। फांसी पर उन्हें दो साल बाद चढ़ाया जायेगा।

उन पर भ्रष्टाचार और पद का दुरुपयोग कर भारी धनराशि एकत्र करने और अय्याशी का आरोप है। चीन में हत्या और भ्रष्टाचार के साथ–साथ कई अपराधों के लिए फांसी का प्रावधान है।

मगर भारत में भ्रष्टाचार के लिए जितनी भी सजा का प्रावधान है, वह भी किसी सामर्थ्यवान व्यक्ति को नहीं मिल पाती। क्योंकि यहाँ कार्यवाही करने वालों से बचाने वालों के हाथ अक्सर अधिक मजबूत होते हैं।

लिऊ के भ्रष्टाचार का पता लगने में थोड़ी देर जरूर हुई, पर वहाँ लगता है कि देर है, अंधेर नहीं है। मगर इस देश में देर भी है और अंधेर भी। भ्रष्टाचार के मामले यहाँ बरसों तक चलते हैं और अंततः अधिकतर बड़े आरोपी बच जाते हैं।

यहाँ बड़े–बड़े घोटालेबाज कुछ दिनों के लिए विचाराधीन कैदी के रूप में जेल जरूर जाते हैं, पर अंततः अदालतों तक अपने खिलाफ सबूत पहुँचने ही नहीं देते और उनमें से अधिकतर बरी हो जाते हैं। नतीजन इस देश की हालत बिगड़ती जा रही है।

सब ओर, अराजकता नजर आ रही है। शीर्ष पर बैठे हुक्मरानों को भी कानून का कोई डर है, ऐसा नहीं लगता। आज इस देश की न तो सीमाएँ सुरक्षित हैं और न ही आंतरिक सुरक्षा को लेकर कोई निश्चिंत है। ऐसी अस्त–व्यस्त हालत के पीछे कहीं न कहीं परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से भ्रष्टाचार ही जिम्मेदार है। इसी साल इस देश में रेल घूसकांड हुआ। मामले की जांच शुरू भी हुई, पर लगता नहीं कि असली गुनहगारों को कोई सजा मिलेगी।

चारा घोटाले की 1996 में ही सीबीआई जांच शुरू हुई थी। आज तक उस जांच और अभियोजन को उसकी तार्किक परिणति तक नहीं पहुँचाया जा सका। ऐसे में दूसरे भ्रष्ट तत्त्वों का मनोबल बढ़ेगा ही। उन्हें लगता है कि मुकदमे और जांच से कुछ नहीं होता। 1987 के बोफोर्स घोटाले को तार्किक परिणति तक नहीं पहुँचाया जा सका। बोफोर्स घोटाले के बाद हुए चुनाव में तो केन्द्र की कांग्रेस सरकार उसी कारण हार गई थी। जनता ने उसे राजनीतिक सजा जरूर दी, पर जांच एजेंसी और अभियोजन विफल रहे।

राष्ट्रमण्डल खेल घोटाले, 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले, शेयर बाजार जैसे घोटाले और वोट के लिए नोट घोटाले जैसे कई मामले सामने आए। कोलगेट घोटाला, टाटा ट्रक घोटाला और हेलीकॉप्टर घोटाला लोगों की स्मृति में है। कई घोटालों को लोग भूल चुके हैं। इतना जरूर याद है कि इस देश में घोटालेबाजों को आमतौर पर सजा नहीं मिलती, बल्कि राजनीति में घोटालेबाज लोग आगे ही बढ़ते जाते हैं।

चीन हमसे दो साल बाद आजाद हुआ था। उसने हमसे कई गुना अधिक प्रगति की है। यह और बात है कि उनकी शासन प्रणाली दूसरी रही। मगर दुनिया के कई लोकतांत्रिक देश भी आज अपने यहां कानून का शासन स्थापित करने में सफल रहे हैं। वहाँ घोटालेबाज बच नहीं सकते।

प्रगति के बल पर हमारा पड़ोसी चीन आए दिन हमें आंखें दिखाता रहता है। हमारे हुक्मरान उससे सहमते रहते हैं। भ्रष्टाचार के प्रति उसके कड़े रूख के कारण ही उसका ताकतवर बनना सम्भव हो सका। क्या हमारे देश के हुक्मरान भी कभी बड़े पदों पर बैठे प्रभावशाली लोगों के भ्रष्टाचार पर ऐसा ही कड़ा रवैया अपना पायेंगे, जैसा चीन ने अपनाया है?

यदि नहीं तो हम अपने साधनों को भ्रष्टाचार में लुटाते रहेंगे और सीमा पर तैनाती के लिए हमारे पास पैसे के अभाव में न तो हथियार जुट पायेंगे और न ही समुचित संख्या में सैनिक। आर्थिक व्यवस्था भी लुंजपुंज ही रहेगी। जो देश अपने रेल मंत्री को भी सजा दे सकता है, वहीं देश–दुनिया में सिर ऊँचा करके रह सकता है।

दिशाहीन बदलाव

— भगवान सिंह

अब देश, मजहब या किसी वैचारिक प्रतिबद्धता के लिए सिर कटाने से अधिक मनुष्य को अपने लोभ और कृत्रिम आवश्यकताओं में कटौती करने की आवश्यकता प्रमुख हो चली है। नित नए आविष्कार कर परिवर्तनों का सैलाब लाने के बजाय उनके दूरगामी, अनिष्टकारी परिणामों के संबंध में गहराई से विचार करते हुए उनकी हदबंदी करने की जरूरत है।

जमाना बदलाव का है। हरेक की जबान से 'बदलाव' ऊंची उड़ान, तेज रफ्तार आदि के रूप में प्रकट हो रहा है। यह त्वरित बदलाव या परिवर्तन सत्रहवीं–अठारहवीं सदी के यूरोप में घटित औद्योगिक क्रांति और फ्रांसीसी राज्य क्रांति की कोख से पैदा हुई अवधारणा है। क्रांति का अर्थ ही किया गया अचानक या शीघ्रता से होने वाला परिवर्तन। तब से उद्योग और राजनीति में बदलाव या क्रांति का विश्वव्यापी अभियान चल पड़ा, जो अब तक चल रहा है। अब राजनीतिक–सामाजिक परिवर्तनों की जगह ले ली है प्रौद्योगिकी से होने वाले परिवर्तनों ने। नई–नई प्रौद्योगिकी का आविष्कार और उनसे होने वाले त्वरित बदलावों से मानव समुदाय इस कदर अभिभूत है कि वह इसके दूरगामी दुष्परिणामों के बारे में सोचने की जहमत नहीं उठाना चाहता। उसका सारा सोच तात्कालिक फायदे तक सिमट चुका है।

पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जब पूरी दुनिया मशीनों के आविष्कार और उससे होने वाले लाभकारी बदलावों से अभिभूत हो रही थी, गांधी ने 'हिंद स्वराज' लिख कर पूरे विश्व को मशीनी सभ्यता से होने वाले बदलाव के अनिष्टकारी पक्ष के प्रति सावधान कर दिया था। इसे 'शैतानी सभ्यता' बताते हुए उन्होंने भारत के प्राचीन शारीरिक श्रम पर आधारित कृषि और हस्तशिल्प की वांछनीयता की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया था।

गांधी ने इस यंत्र–आधारित परिवर्तन को लेकर जो आशंकाएं प्रकट की थीं, उसे हिंदी के दो महान साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते दिखाई देते हैं। प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' में इस उद्योगीकरण के झंझावत से उत्पन्न होने वाले मानवीय संकटों का चित्र प्रस्तुत किया। उपन्यास की मुख्य कथा पांडेपुर में कारखाना लगने से लोगों में पुश्तैनी खेती और आवास से विस्थापित होने से उपजी पीड़ा की है। इस उपन्यास का नायक सूरदास मशीनीकरण के चलते विस्थापन के विरुद्ध सत्याग्रह–संघर्ष करते हुए शहीद हो जाता है। 'गोदान' में तो प्रेमचंद मशीन से चलने वाली गन्ना–मिल में आग ही लगवा देते हैं और उसके मलबे पर मिल मालिक खन्ना रोता–बिलखता दिखाई देता है।

दूसरे महत्त्वपूर्ण साहित्यकार जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' के जरिए इस यांत्रिक सभ्यता से होने वाले परिवर्तन के अनिष्ट का लोमहर्षक चित्र रखते हैं– 'प्रकृति शक्ति तुमने यंत्रों से सबकी छीनी। शोषण कर बना दी जीवनी जर्जर झीनी।' 'श्रममय कोलाहल, पीड़ामय विकल प्रवर्तन महायंत्र का, क्षण भर भी विश्राम नहीं है, प्राणदास है क्रिया तंत्र का।६ यहां सतत संघर्ष विकलता, कोलाहल का यहां राज है, अंधकार में दौड़ लग रही मतवाला यह सब समाज है।'

इस यांत्रिकीकरण के जरिए होने वाले त्वरित बदलावों के दुष्परिणामों से दूसरे देशों के भी कुछ विचारक सावधान करते रहे हैं, लेकिन इससे विमुख होने या इसकी गति में कमी लाने के बजाय मनुष्य और अधिक उत्साह और आवेग से इस बदलाव के पीछे दौड़ता चला जा रहा है। इसे लक्ष्य करते हुए महात्मा गांधी ने 5 अक्तूबर, 1945 को जवाहरलाल नेहरू को लिखे पत्र में दो टूक शब्दों में चेताया था– 'मुझे कोई डर नहीं है कि दुनिया उल्टी ओर ही जा रही है। यों तो पतंगा जब अपने नाश की ओर जाता है तब सबसे ज्यादा चक्कर खाता है और चक्कर खाते–खाते जल जाता है। हो सकता है कि हिंदोस्तान इस पतंगे के चक्कर से न बच सके। मेरा फर्ज है कि आखिर दम तक उसमें से उसे और उसकी मार्फत जगत को बचाने की कोशिश करूं। मेरे कहने का निचोड़ यह है कि मनुष्य जीवन के लिए जितनी जरूरत की चीज है, उस पर निजी काबू रहना ही चाहिए– अगर न रहे तो व्यक्ति बच ही नहीं सकता।'

लेकिन गांधी की इस चेतावनी पर उनके राजनीतिक उत्तराधिकारियों ने कोई ध्यान नहीं दिया। पश्चिमी तकनीक के मार्ग पर सरपट दौड़ पड़े। नेहरू ने बड़े–बड़े बांधों और कल–कारखानों को आधुनिक भारत के मंदिरों की संज्ञा दी, तो आजाद भारत के पहले सुनियोजित शहर चंडीगढ़ को इन शब्दों में गौरवान्वित किया– 'पुराने रिवाजों की बेड़ियों से आजाद यह महान रचना आधुनिक भारत का नया प्रतीक है।' तब से भारत में ऐसे 'आधुनिक मंदिरों' और 'नए प्रतीकों' के निर्माण का ऐसा सिलसिला चल पघ कि जिस भारत की मार्फत गांधी जी दुनिया को बचाने का मार्ग दिखाना चाहते थे, वह भारत खुद अब पतंगे की तरह तेजी से चक्कर खाता नजर आने लगा है। तरह–तरह के यांत्रिक और प्रौद्योगिक आविष्कारों, आयुधों और परिवर्तनों के महायान पर सवार इस विकास के महायज्ञ में बेशुमार प्राकृतिक संसाधनों की आहुति पड़ती जा रही है।

इसे देखते हुए मानना पड़ता है कि भले कार्ल मार्क्स के राजनीतिक–सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के दर्शन को दुनिया ने विस्मृत कर दिया हो, लेकिन 'सवाल दुनिया को बदलने का है' रूप में व्यक्त मार्क्स के इस सरोकार को अमली जामा पहनाने में पूरी दुनिया मनोयोग से लगी हुई है। जाहिर है यह बदलाव राजनीतिक व्यवस्था को शोषण और विषमता से मुक्त करने के बजाय केवल शारीरिक सुख–सुविधाओं की बढ़ोतरी के स्तर पर हो रहा है और इस क्रम में प्राकृतिक संसाधनों का बेरहमी से दोहन हो रहा है– पशु–पक्षियों, नदियों, पर्वत–पहाड़, वनस्पतियों आदि को सदा–सदा के लिए उन्मूलित करते हुए विकास के नाम पर इस बदलाव को अंजाम दिया जा रहा है। यह सब देखते हुए महसूस होता है कि अब 'दुनिया को बदलने' का नहीं, बल्कि 'बचाने' का सवाल अधिक संदर्भवान और महत्त्वपूर्ण हो उठा है। अब देश, मजहब या किसी वैचारिक प्रतिबद्धता के लिए सिर कटाने से अधिक मनुष्य को अपने लोभ और कृत्रिम आवश्यकताओं में कटौती करने की आवश्यकता प्रमुख हो चली है। नित नए आविष्कार कर परिवर्तनों का सैलाब लाने के बजाय उनके दूरगामी, अनिष्टकारी परिणामों के संबंध में गहराई से विचार करते हुए उनकी हदबंदी करने की जरूरत है।

आंख मूंद कर, बुद्धि–विवेकशीलता को ताक पर रख केवल ज्ञान–विज्ञान के दंभ में आविष्कार पर आविष्कार करते हुए अनपेक्षित परिवर्तन या निर्माण को अंजाम देने के खिलाफ सख्त चेतावनी देने वाली हजारों वर्ष पूर्व लिखी गई 'पंचतंत्र' की 'सिंह जिलाने का फल' शीर्षक कहानी ज्यादा प्रासंगिक हो उठी है।

अगर इस कहानी या अपने इतिहास से हम सबक न लेकर हमारे वैज्ञानिक, तकनीशियन, उद्योगपति, शासक वर्ग विकास के नाम पर आविष्कार पर आविष्कार करते जाएंगे तो निस्संदेह आने वाले समय में यह ऐसा बाघ बन खड़ा होगा जो न केवल अपने निर्माताओं को, बल्कि निर्दोष व्यक्तियों को भी ग्रास बना लेगा क्योंकि तब कोई पेड़ भी नहीं होगा, जिस पर चढ़ कर कोई अपने को बचा सकेगा। इसलिए हमें बचाव के तरीके तलाशने होंगे।

जनसत्ता 30 जून, 2013

..... पिछले अंक का शेष भाग

आओ! धर्म की चर्चा करें

नाथद्वारा के ऐतिहासिक मन्दिर में दलितों के प्रवेश पर लगे प्रतिबन्ध को तोड़ने के लिए जब हमने लगातार दो वर्ष संघर्ष किया तब पता चला कि 600 साल पहले वृन्दावन से लाई श्रीनाथ की प्रतिमा को नाथद्वारा मंदिर में किसी दलित एवं शोषित द्वारा छूना तो दूर, देखना भी वर्जित था। छू सकते थे या देख सकते थे तो कौन?बम्बई और गुजरात के धन्ना सेठ जो उन हजारों पण्डों को पाल सकते थे जिनका नित्यप्रति का काम था शुद्ध घी के तीन कुंओं से पम्प द्वारा घी निकालकर, सोने की चक्कियों में केसर पीसकर पांच–पांच सौ रुपये के एक–एक लड्डू से कृष्ण भगवान को भोग लगाना और भक्तों को आशीर्वाद देना कि लूटो, जितना लूट सकते हो देश को, चूसो, जितना चूस सकते हो खून गरीब का, पर मंदिर में आकर मत्था टेकते ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे और मिलेगा तुम्हें स्वर्ग का वीज़ा लगा पासपोर्ट।

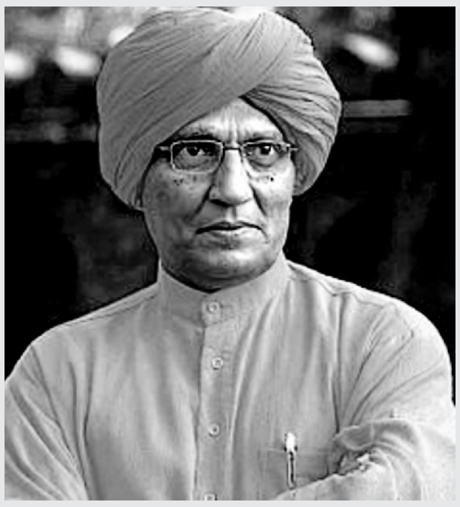

प्रश्न है कि क्या सत्य की यह साधना और मोक्ष की प्राप्ति नितान्त वैयक्तिक है?समाज से दूर पर्वत की कन्दराओं में समाधिस्थ हो जाना ही क्या इसका रास्ता है?क्या ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है और जगत् तथा इसके क्रियाकलाप सब मिथ्या हैं?ब्रह्मसत्य जगत मिथ्या की इस एकांगी धारणा ने धर्म के नाम पर ढेर सारी विकृतियों को जन्म दिया। मुट्ठी भर लोग जिन्होंने धर्म की इस एकांगी साधना का ढोंग किया, वे धर्म के साथ–साथ ईश्वर के भी ठेकेदार हो गये। कालान्तर में इस विकृति के चलते ऐसे लोग छा गए जिन्होंने धर्म को, ईश्वरोपासना को, कर्मकाण्डों को जटिल, दुरूह बनाने के साथ–साथ उन पर अपना जन्मना एकाधिकार

समाज में जब–जब धर्म इतना विकृत हो जाता है कि वह अपने मूल ओजस्वी स्वरूप के ठीक विपरीत पाखण्ड और पाषाण पूजन में बदल जाता है तब–तब एक प्रचण्ड विद्रोह का रूप लेकर दलित शोषित समाज उठ खड़ा होता है, उस विकृत धर्म को ध्वस्त कर एक नई वैचारिक क्रान्ति की स्थापना करने के लिए जिसमें जन्म पर आधारित और शोषण पर आधारित विषमतामूलक व्यवस्था के प्रति आक्रोश होता है। पर निहित स्वार्थ के जो गढ़ पूरी तरह नष्ट नहीं हो पाते, वे छिपकर, दबे पाँव, भेष बदलकर उस नये परिवेश पर धीरे–धीरे कब्जा कर लेते हैं। अन्याय के विरूद्ध उठा हुआ आक्रोश का लावा ठंडा होते–होते एक नया धर्म, नई पीढ़ियों के हाथों, नई रूढ़ियों, नई मूर्तियों और नई बेड़ियों में बदलकर फिर उसी अन्याय की व्यवस्था के लिए उपजाऊ भूमि बन जाता है।

स्थापित कर लिया और बाकी समाज को स्वर्ग अथवा नरक में भेजने का जिम्मा ले लिया। वास्तव में देखा जाए तो इस समाज को सचमुच का स्वर्ग बनाने के बदले एक काल्पनिक स्वर्ग का सपना दिखाया गया और उसके पासपोर्ट बीजा आदि का दफ्तर इन्होंने अपने पास ही खोल लिया। जन्मनाजातिवाद के बीज जब अंकुरित होकर पल्लवित होने लगे तो सहज ज्ञान और सहज साधना को और भी सीमित करने के इरादे से इन ठेकेदारों ने स्त्री शूद्रो नाधीयताम् कहकर स्त्री मात्र को तथा जो ब्राह्मण, क्षत्रिय घोषित करने वाला प्राणी ब्राह्मणवादी की भूमिका में आकर निस्तेज और निर्वीर्य तो हुआ पर उसने फतवा दे डाला कि अनजाने में यदि कोई स्त्री अथवा शूद्र वेद मन्त्र का उच्चारण पर ले तो उसकी जिह्वा का छेदन कर दिया जाए, सुन ले तो कान में सीसा पिघला कर डाल दिया जाये और हृदय में धारण कर ले तो उसका हृदयस्थल छलनी–छलनी कर दिया जाए। पाँच हजार वर्षों तक ब्राह्मणवादी द्रोणाचार्यों की जमात करोड़ों एकलव्यों के अंगूठे काट कर अपने क्षत्रिय पुत्रों, अपने राजपुत्रों के एकाधिकार का मार्ग प्रशस्त करती रही। बीच में किसी सिद्धार्थ गौतम ने आकर इस ब्राह्मणवाद को चुनौती दी और नारी को, शूद्र को, यहाँ तक कि मूक पशुओं के भी अधिकार का प्रश्न उठाया तो इस युगान्तरकारी विप्लवी को कुचलने के लिए अद्वैतवाद का झंडा खड़ा करने के इरादे से आदि शंकर ने विवेक चूड़ामणि में सवाल किया – किमेकं नरकस्य द्वारम्?नरक का द्वार कौन है?और स्वयं ही उत्तर दे दिया – नारी।

गौतम बुद्ध की तरह जब भगवान महावीर ने भी प्राणीमात्र के प्रति करूणा और न्याय की भावना से प्रेरित होकर ब्राह्मणवाद के एकाधिकारी तत्वों के विरूद्ध विद्रोह किया और आर्य संस्कृति की पुनर्स्थापना का प्रयास किया तो तथाकथित धर्मध्वजियों ने उन दोनों को महानास्तिक घोषित कर जड़ से उखाड़ने की कोशिश की।

पूरे इतिहास में एक ही क्रम दीखता है। 'ईश्वर', 'ईश्वरीय ज्ञान–विज्ञान' पर कब्जा करो। धर्मोपासना को सहज के बदले जटिल बनाओ। व्यक्ति का स्थान उसके गुण, कर्म और स्वभाव के बदले उसके जन्म से तय करो।

इसी को आधार बनाकर प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों पर पूरे समाज के अधिकार को छीनकर उसे सीमित हाथों में रख शोषण एवं यथास्थितिवाद का पोषण करो। जो भी विचारों की अग्नि ले विद्रोह का झंडा उठाये उसे नास्तिक बताकर ईश्वरीय सृष्टि का दुश्मन घोषित करो। फिर भी न माने तो धीरे से घुसपैठ करो विद्रोही सेना में और वैचारिक क्रान्ति की सुलगती धधकती मशाल को पत्थर की पाषाण प्रतिमा में बदलकर जड़ पूजा के बहाने उस क्रान्ति को निस्तेज कर दो। समाज में जब–जब धर्म इतना विकृत हो जाता है कि वह अपने मूल ओजस्वी स्वरूप के ठीक विपरीत पाखण्ड और पाषाण पूजन में बदल जाता है तब–तब एक प्रचण्ड विद्रोह का रूप लेकर दलित शोषित समाज उठ खड़ा होता है, उस विकृत धर्म को ध्वस्त कर एक नई वैचारिक क्रान्ति की स्थापना करने के लिए जिसमें जन्म पर आधारित और शोषण पर आधारित विषमतामूलक व्यवस्था के प्रति आक्रोश होता है। पर निहित स्वार्थ के जो गढ़ पूरी तरह नष्ट नहीं हो पाते, वे छिपकर, दबे पाँव, भेष बदलकर उस नये परिवेश पर धीरे–धीरे कब्जा कर लेते हैं। अन्याय के विरूद्ध उठा हुआ आक्रोश का लावा ठंडा होते–होते एक नया धर्म, नई पीढ़ियों के हाथों, नई रूढ़ियों, नई मूर्तियों और नई बेड़ियों में बदलकर फिर उसी अन्याय की व्यवस्था के लिए उपजाऊ भूमि बन जाता है।

पाँच हजार वर्ष पूर्व द्रोणाचार्य की जन्मना विषमता मूलक व्यवस्था को तोड़ने के लिए ही तो कृष्ण ने गीता में गरज कर घोषणा की थी :–

चातुर्वर्ण्य मया सृष्टा, गुण कर्म विभागशः

पैदा होने से पहले ही मौत का वारन्ट जिसके नाम पर जारी हो गया हो, जो पैदा ही जेल के सींखचों के पीछे हुआ, ऐसे महान् क्रान्तिकारी कृष्ण ने अपनी किशोरावस्था में ही संगठित किया शोषित ग्वाल बालों और गोपियों को और खड़ा कर दिया, उन्हें अपने सगे मामा कंस के अन्याय के खिलाफ।

उसी कृष्ण में यह साहस था कि वह अर्जुन को ललकार कर कह सके कि तुम्हारा अपना सगा रिश्तेदार, गुरु और पितामह ही अन्याय का पक्ष लेकर क्यों न खड़ा हुआ हो, उठाओ गाण्डीव और ईंट से ईंट बजा दो दुष्ट दुर्योधन और दुःशासन के कुशासन की। गीता का निष्कर्ष एक शब्द में : **अन्याय एवं आसुरी प्रवृत्तियों का प्रतिकार ही धर्म है।**

जिस कृष्ण ने जन्म से मृत्युपर्यन्त अन्याय के विरूद्ध संघर्ष ही संघर्ष किया, कभी किसी मन्दिर में जाकर घण्टी बजाने के बदले दुश्मन की ईंट से ईंट बजा दी, कभी किसी मूर्ति की आरती उतारने के बदले अत्याचारी शिशुपाल की गरदन ही उतार दी, उसी क्रान्तिद्रष्टा कृष्ण को उसके अकर्मण्य चेलों ने मन्दिर में मूर्ति बनाकर खड़ा कर दिया – उसके पैरों में घुँघुरु बाँध दिये, हाथ से सुदर्शनचक्र छीन कर बांसुरी पकड़ा दी और लगे चेले चेलियों के साथ थिरकने रासलीला में। किसी गरीब दलित की कमसिन बेटी को जोगिन और देवदासी बनाकर मन्दिर परिसर में ही उसका देह शोषण करने के लिए ब्राह्मणवादी पुजारी के पास इससे सरल मार्ग हो भी क्या सकता था? नाथद्वारा के ऐतिहासिक मन्दिर में दलितों के प्रवेश पर लगे प्रतिबन्ध को तोड़ने के लिए जब हमने लगातार दो वर्ष संघर्ष किया तब पता चला कि 600 साल पहले वृन्दावन से लाई श्रीनाथ की प्रतिमा को नाथद्वारा मंदिर में किसी दलित एवं शोषित द्वारा छूना तो दूर, देखना भी वर्जित था। छू सकते थे या देख सकते थे तो कौन?बम्बई और गुजरात के धन्ना सेठ जो उन हजारों पण्डों को पाल सकते थे जिनका नित्यप्रति का काम था शुद्ध घी के तीन कुंओं से पम्प द्वारा घी निकालकर, सोने की चक्कियों में केसर पीसकर पांच–पांच सौ रुपये के एक–एक लड्डू से कृष्ण भगवान को भोग लगाना और भक्तों को आशीर्वाद देना कि लूटो, जितना लूट सकते हो देश को, चूसो, जितना चूस सकते हो खून गरीब का, पर मंदिर में आकर मत्था टेकते ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे और मिलेगा तुम्हें स्वर्ग का वीज़ा लगा पासपोर्ट।

जिस राम ने रावण जैसे निशाचरों के नाश का बचपन में ही संकल्प लेकर घोषणा की थी निशिचर हीन करहुँ मही भुज उठाय प्रण कीन्ह, उस राम को भी जड़ मूर्ति में बदलकर अयोध्या में दुकानें सजा लीं। आज भी यहाँ 15 मन्दिर ऐसे हैं जिनका प्रत्येक पुजारी यह दावा करता है कि राम का असली जन्म स्थान उसी का मन्दिर है। पर राम के नकली ठेकेदार एक सोलहवें मन्दिर के लिए तड़प रहे हैं। अन्याय से लड़ने का नाम था राम, अन्याय से लड़ने का नाम था कृष्ण, पर राम और कृष्ण के पुजारियों का काम रह गया है – हरे रामा हरे कृष्णा, कृष्णा कृष्णा हरे हरे चिल्लाना और अन्याय देखकर उससे लड़कर मिटाने के बदले आराम से समझौता कर लेना। बहुत जोश उठा तो दशहरे पर अन्याय पर न्याय की जीत के नाम पर किसी असली रावण के बदले कागज के नकली रावण को फूँक कर नाच लेना। रोज–रोज समाज में शोषण करने वाले अन्यायी रावणों को इससे अच्छा क्या चाहिए?

धर्म की इसी विकृति का परिणाम है कि धन–ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी की सबसे ज्यादा पूजा करने वाला भारत ही दुनियाँ का सबसे गरीब देश है। विद्या की देवी सरस्वती की सबसे ज्यादा पूजा करने वाला भारत ही दुनिया के सबसे अधिक अनपढ़, अंगूठा छाप लोगों का देश है।

धर्म की विकृति का शिकार केवल हिन्दू ही हुआ हो ऐसा भी नहीं है। पत्थर पूजा एवं मूर्ति पूजा के विरूद्ध प्रचण्ड विद्रोह के रूप में उभरे इस्लाम में भी कब्रें पूजी जाती हैं, मजारों पर चादरें चढ़ती हैं और हज करने वाले हज यात्री काबा में, या तो किसी पत्थर की सात बार परिक्रमा करते हैं या किसी पत्थर (हजूल हस्वद या हजूल यमानी) को चूमते हैं या फिर कंकड़–पत्थर शैतान पर फेंक कर अपने मजहबी उसूलों को दफन कर देते हैं। मुझे सबसे ज्यादा तरस उस समय आता है जब किसी ईद, बकरीद पर कुरबानी के नाम पर जीवन से विलासिता त्यागकर, ऐय्याशी की संस्कृति के खिलाफ विद्रोह का झण्डा बुलन्द करने के बदले मुसलमान किसी निरीह मेमने या बकरे को धीरे–धीरे काटकर हलाल कर देता है और बुरी तरह छटपटाते हुए मेमने को सुनाता है – बिस्मिला हिर रहमानिरहीम्। जब रहमत का, कुरबानी का, दया और करूणा का यह अंदाज हो तो बाकी का अन्दाज आप लगा सकते हैं। मुहर्रम के दिन कागज के ताजिये उठा, सवारी में नारे लगते हैं – हाय हुसैन हम न हुए! इसके बदले जिस हजरत इमाम हुसैन ने कर्बला के मैदान में जिस ऐय्याश, अत्याचारी यज़ीद के खिलाफ संघर्ष में शहादत दी थी उसी तरह गली के कोने पर खड़े भ्रष्ट यजीदों को ये लोग ललकारते और संघर्ष में जरूरत पड़ती तो इमाम साहब की तरह शहीद हो जाते! क्या आश्चर्य है कि जिस अनुपात से हर साल कागज के नकली रावणों को जलाने का और कागजी ताजियों के बीच मुहर्रम की सवारी का रिवाज बढ़ रहा है उसी अनुपात से समाज में असली रावणों और असली यज़ीदों की भी तादाद बढ़ रही है।

रोमन साम्राज्य के अन्याय से टकराने वाले अदम्य साहसी जीज़स सूली पर शहीद हो जाते हैं और लाखों शोषितों में संघर्ष की आग सुलगा देते हैं पर कितने दुस्साहस से पादरी और पोप इस प्रेरणादायक शहादत को जीज़स के पुनर्जीवित होने की कहानी गढ़कर झुठला देते हैं और अन्याय से संघर्ष करने के बदले लाखों करोड़ों ईसाईयों को केवल ईशु पर ईमान लाने की बात बताते हैं। ईसाईयों का इतिहास भी पाखण्ड, अन्धविश्वास और चमत्कारों का वैसा ही मोहताज है जितने अन्य सभी मत, सम्प्रदाय, पन्थ और रिलीजन हैं। वास्तव में इन मजहबों ने धर्म की परिभाषा ही बदल कर रख दी है। यही कारण है कि हर मजहब उपसम्प्रदायों में बँटता चला गया। हिन्दू धर्म ही नहीं, बौद्ध, जैन, इस्लाम, ईसाइयत सभी इस विभाजन के शिकार होकर अपनी विश्वसनीयता को दाँव पर लगा बैठे हैं।

धर्म का मर्म निरूपित करते हुए गोबिन्द सिंह जी ने प्रार्थना की थी –

देहि शिवा वर मोहि इहै, शुभ कर्मन तो कबहूँ न टरौं।
न डरौं अरि सों जब जाय लरौं, निश्चय कर अपनी जीत करौं।।

अगले पृष्ठ पर जारी है

पिछले पृष्ठ का शेष

आओ! धर्म की चर्चा करें

अपने चार जवान बेटों को शहादत का वसन्ती चोला पहनाने वाले इस तेजस्वी गुरू के चेले आज खालसा और सिखों के नाम पर किसी अन्याय का मुकाबला करने की जगह गुरुद्वारों पर संगमर्मर के मंहगे पत्थर और गुम्बद पर सोने की पालिश लगाने की होड़ में पड़े हैं। गुरु तेग बहादुर और बंदा वैरागी की सेना के सिपाहियों की तलवारों में जंग लग चुकी है और सारा धर्म–कर्म पंचककारों में सिमट कर रह गया है।

इन सभी लक्षणों को देखकर साफ लगता है कि धर्म के आडम्बर में अधर्म फलफूल रहा है और अधर्म के साये में अन्याय दनदना रहा है। धर्म के आडम्बर का और अन्याय के ठेकेदारों का एक अलिखित समझौता समाज में लागू है। मनुष्यों द्वारा मनुष्य के शोषण और प्रकृति के निर्मम दोहन से अर्जित नाजायज धन का एक हिस्सा बहुत सलीके से धर्म के आडम्बर का और अन्याय के ठेकेदारों का एक हिस्सा बहुत सलीके से धर्म के आडम्बर को बनाये रखने में खर्च हो जाता है और राज–मठ और सेठ का नापाक गठजोड़ यथास्थितिवाद का पोषक बना रहता है। शायद ऐसे ही खुदा और उसके बंदों को देखकर शायर रो पड़ता है :–

खुदा के बंदों को देखकर के,
खुदा से मुनकिर हुई है दुनिया।
कि ऐसे बंदे हैं जिस खुदा के,
वो कोई अच्छा खुदा नहीं है।।

शायद इसीलिए कार्लमार्क्स जैसे मनीषी को ऐसे धर्म के संगठित गिरोह के विरूद्ध बगावत करनी पड़ी। साम्यवाद का इन्कलाबी तेवर जिस तेजी से ज्वालामुखी की तरह धधकता सामने आया – सारे धर्माचार्य प्रकम्पित हो गये और तब उन्हें लगा कि आपस में चाहे कितने मतभेद हों, साम्यवाद को नास्तिकवाद बताकर उसे समाप्त कर देने के लिए वे सभी एक हो जायें। उन्होंने इस तथ्य को बड़े सुविधाजनक तरीके से भुला दिया कि करूणा, न्याय, समता पर आधारित साम्यवादी व्यवस्था इन तथाकथित धर्मों की तुलना में कहीं अधिक आध्यात्मिक थी, कहीं अधिक मानवीय मूल्यों पर आधारित थी। यदि ईश्वर की प्रचलित अवधारणा को नकारने मात्र से मार्क्स और लेनिन का साम्यवाद नास्तिक और निन्दनीय हो गया तो सिद्धार्थ गौतम का बौद्ध धर्म और भगवान महावीर का जैन धर्म धार्मिक कैसे हो सकते हैं?

शायद इसीलिए कार्लमार्क्स जैसे मनीषी को ऐसे धर्म के संगठित गिरोह के विरूद्ध बगावत करनी पड़ी। साम्यवाद का इन्कलाबी तेवर जिस तेजी से ज्वालामुखी की तरह धधकता सामने आया – सारे धर्माचार्य प्रकम्पित हो गये और तब उन्हें लगा कि आपस में चाहे कितने मतभेद हों, साम्यवाद को नास्तिकवाद बताकर उसे समाप्त कर देने के लिए वे सभी एक हो जायें। उन्होंने इस तथ्य को बड़े सुविधाजनक तरीके से भुला दिया कि करूणा, न्याय, समता पर आधारित साम्यवादी व्यवस्था इन तथाकथित धर्मों की तुलना में कहीं अधिक आध्यात्मिक थी, कहीं अधिक मानवीय मूल्यों पर आधारित थी। यदि ईश्वर की प्रचलित अवधारणा को नकारने मात्र से मार्क्स और लेनिन का साम्यवाद नास्तिक और निन्दनीय हो गया तो सिद्धार्थ गौतम का बौद्ध धर्म और भगवान महावीर का जैन धर्म धार्मिक कैसे हो सकते हैं?

बौद्ध मत में जिस तरह सूक्ष्म संवेदनाओं को देखते–देखते साधक समता में स्थित होता स्थितप्रज्ञ हो जाता है उसी तरह मार्क्सवाद के वैज्ञानिक सिद्धान्तों की सूक्ष्म कसौटी पर वैयक्तिक स्वामित्व का अधिकार समाप्त होकर, निकृष्ट पूंजीवाद को बदलकर, समता पर आधारित समाजवादी व्यवस्था को जन्म दे देता है। एक के पास समता अन्दर है तो दूसरे के पास समता बाहर समाज में लागू है।

पर यहाँ यह जान लेना भी जरूरी है कि न तो केवल धार्मिक साधना के तरीके से व्यक्ति–व्यक्ति के हृदय को समता में स्थापित किया जा सकता है और न ही उत्पादन सम्बन्धों को बदल देने से अपने आप व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो जाता है। धर्मों के बावजूद समाज में घोर अन्यायकारी विषमता व्याप्त रहती है और उधर क्रान्तिकारी समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के बावजूद भी व्यक्ति अन्दर से राग और द्वेष की काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विषय वासनाओं की जकड़–पकड़ में अंदर से टूटा रहता है। यही वजह भी है कि रूस और चीन आदि देशों में समाजवादी क्रान्ति के बाद भी व्यक्ति पूंजीवादी भोगवादी वासनाओं से मुक्त नहीं हो पाया और यह अधूरापन ही साम्यवाद की नींव को खोखला कर रहा है।

इस तरह हम यह पाते हैं कि वर्णाश्रम–व्यवस्था आज की मौजूदा जातिवादी व्यवस्था के ठीक विपरीत है। आज की शोषण, अन्याय एवं विषमता पर आधारित व्यक्तिवादी विचारधारा को नकारती, ठुकराती वर्णाश्रम व्यवस्था न्याय, सहयोग एवं समता पर आधारित समष्टिवादी विचारधारा है। आज के भोगवादी भौतिकवादी यान्त्रिकी मूल्यों की जगह वर्णाश्रम त्यागपूर्वक भोगने, सादा जीवन उच्च विचार की संस्कृति को बढ़ावा देती है और बच्चे से लेकर बूढ़े तक प्रतिक्षण, प्रत्येक व्यक्ति को उसके जीवन के प्रति आस्था के साथ–साथ आध्यात्मिक मूल्यों के सामाजिक आर्थिक राजनैतिक व्यवस्थाओं की धुरी पर प्रतिष्ठित करती है। इन सबसे बड़ी बात तो यह है कि वर्णाश्रम व्यवस्था रूढ़िवादी धर्मों की कैद से ईश्वर को मुक्त करती है और समाज परिवर्तन की

यहीं यह प्रश्न उठता है कि क्या कोई ऐसी व्यवस्था हो सकती है जिसमें व्यक्ति के अन्दर की समता और समाज में बाहर की समता का समन्वय हो?एक तरफ व्यक्ति ऐन्द्रिय वासनाओं और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों से ऊपर उठता जाये और दूसरी ओर समाज में ढांचागत विषमता तथा अन्याय को समाप्त करने की ऊर्जा बनी रहे?

शायद यही हमारे आज के युग की सबसे बड़ी चुनौती है। इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए सारी दुनिया में कुछ ऐसे लोगों की जरूरत है जो धर्मों के रूढ़िवादी चिन्तन एवं कर्मकाण्डों से बाहर आयें। दूसरी ओर मार्क्सवाद भी एक (आर्थिक) धर्म के रूप में रूढ़ियों से ग्रस्त हो गया है और उसका वैज्ञानिक समाजवाद का नारा खोखला हो गया है। तीसरी ओर स्वयं विज्ञान भी बड़ी तेजी से नित्य नये सत्य की ओर अग्रसर है। कार्लमार्क्स के समय का डार्विनिज़्म जहाँ वैज्ञानिक चिन्तन पर खरा नहीं उतर रहा। वहीं न्यूटन और डाल्टन के युग का सूक्ष्मातिसूक्ष्म एटम (मैटर) आइन्स्टीन के सापेक्षवाद से गुजर कर आज के क्वान्टम फिज़िक्स में एक तरंग (वेवलेंथ) मात्र रह गया है। सोलिड पार्टिकल ठोस परमाणु विसर्जित हो चुका है। उधर ब्रह्माण्ड को सीमित मानने वाला विज्ञान आज उसे अनन्त मानने के लिए विवश हो रहा है।

क्यों नहीं, कुछ सच्चे उदार एवं प्रामाणिक धार्मिक, कुछ सच्चे, उदार, प्रामाणिक मार्क्सवादी और कुछ सच्चे उदार आधुनिक एवं प्रामाणिक वैज्ञानिक साथ बैठते और तीनों श्रेणी के लोग एक दूसरे को शक की नजर से देखने के बदले परस्पर पूरक होने की भावना से खुला संवाद स्थापित करते?एकांगी चिन्तन के बदले सर्वांगीण होना जरूरी है – सांगोपांग और समन्वयवादी होना समीचीन है।

इस संवाद को ही हम एक नई आध्यात्मिक समाजवादी व्यवस्था की शुरूआत कहेंगे। इस महान् ऐतिहासिक पहल के लिए आज मैं एक बहुत ही विनम्र भाव से एक सुझाव के रूप में वैदिक वर्णाश्रम धर्म की चर्चा कर रहा हूँ। वेदों में वर्णित इस समाज व्यवस्था का कोई स्पष्ट इतिहास तो नहीं है पर कुछ चिन्ह कहीं–कहीं अवश्य दिखाई पड़ते हैं। कालान्तर में जब यह व्यवस्था भ्रष्ट हुई तो इसको मूल रूप में ले जाने की भी युगान्तरकारी कोशिशें हुई। पाँच हजार वर्ष पहले योगिराज कृष्ण ने गीता के माध्यम से यह प्रयास किया।

आज से लगभग 150 वर्ष पहले एक क्रान्ति द्रष्टा संन्यासी दयानन्द ने इसे अपनी विचार सरणी का मुख्य सम्बल बनाया और इसी की सरल व्याख्या, वेदों के अप्रतिम विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी (पूर्वनाम बुद्धदेव विद्यालंकार) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक कायाकल्प में की। मैंने स्वयं शिष्यभाव में समर्पणानन्द जी के चरणों में बैठकर जो कुछ सीखा, उसे मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द रूढ़िवाद और कट्टरवाद के प्रबल विरोधी थे और इसीलिए उन्होंने आर्य समाज के दस नियमों में एक विशेष नियम बनाया :–

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

हमारे चिन्तन के लिए भी यही आधार हो ऐसी मेरी प्रार्थना है। इसी के साथ स्वस्थ चिन्तन परम्परा की स्थापना में ऋषिवर ने जो तीन मन्त्र दिये, उन्हें मैं अंग्रेजी के तीन डी के रूप में प्रतिष्ठित करता हूँ।

To Doubt (सवाल करना)
To Debate (बहस करना)
To Dissent (जरूरत पड़ने पर असहमति दर्ज करना)

तो आइये देखते हैं :– वेद में वर्णित समाज व्यवस्था का रूप।

कतिपय पाश्चात्य विद्वानों के दुराग्रहपूर्ण दृष्टिकोण से मुक्त हुआ जा सके तो यह स्पष्ट है कि वेदों में इतिहास और भूगोल ढूँढ़ना गलत होगा। भारतीय आर्य विद्वानों का एक स्वर से यह मत है कि वेद का ईश्वरीय ज्ञान मानवमात्र के कल्याण के लिए है न उसमें जातिपाति या ऊँच–नीच है और न ही भारत अथवा अन्य किसी देश का विशेष दर्जा। उसमें वर्णित आर्य शब्द का अभिप्राय न उत्तर भारतीय से है, न ही किसी अन्य नस्ल से।

आर्य शब्द ऋ गतौ धातु से बना है जिसका सीधा, सरल अर्थ हुआ ज्ञान, गमन और प्राप्ति। जो भी व्यक्ति परमात्मा की इस सृष्टि में गतिशील है, क्रियाशील है, कर्मशील है वही आर्य है। आर्य का संघर्ष समस्त वैदिक वांङ्मय में किसी हिन्दू अथवा मुसलमान से नहीं अपितु दस्यु से है और यजुर्वेद के अनुसार दस्यु कौन है तो उत्तर मिला अकर्माःदस्युः जो कर्म नहीं करता, दूसरों की कमाई पर, शोषण पर जीता है व दस्यु है अर्थात् डाकू है। आर्य को मोटे शब्दों में कमेरा कह सकते हैं और दस्यु को लुटेरा।

अब आगे वेद में स्पष्ट आया है :–

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अराव्णः?

ऋग्.9–63–5

जिसका सीधा अर्थ हुआ अपने राज्य रूपी ऐश्वर्य का विस्तार करते हुए, संसार के मेहनत करने वाले श्रेष्ठ पुरुषों! एक हो जाओ और कंजूस, शोषक प्रवृत्ति के लोगों का संहार कर दो।

उपरोक्त उद्धरण में किसी को कार्लमार्क्स की प्रसिद्ध उक्ति Proletariates of the world unite, establish the dictatorship of the proleteriate and expropriate the expropriators प्रतिध्वनित होती हो तो इसे मैं सहज संयोग ही कहूँगा क्योंकि न तो वेदों की रचना मार्क्स के बाद हुई, न ही कार्ल मार्क्स ने वेद पढ़कर अपनी बात कही होगी। अस्तु! आमतौर से धार्मिक जगत् पर कर्मफल सिद्धान्त का हवाला देकर यह आरोप लगता है कि वह गरीबी–अमीरी, ऊँच–नीच के भेदभाव को पिछले जन्म के कर्मों का फल बताकर औचित्य प्रदान करता है। पर वेद में तो स्पष्ट आदेश है :–

कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः। अथर्ववेद 7–51–8

दाहिने हाथ से पुरुषार्थ करो और बायें से फल प्राप्त करो और यदि कोई तुमसे काम तो ले ले पर दाम न दे तो क्या हाथ पर हाथ धरे अपने पिछले जन्म के किन्हीं अशुभ कर्मों का उसे फल मान लो अथवा अपने अधिकार प्राप्ति हेतु संघर्ष करो?

वैदिक ऋचाओं का हिन्दी पद्यानुवाद करने वाले प्रसिद्ध कवि बशीर अहमद मयूख के शब्दों में :–

वह समाज का शोषणकर्ता,
धन केन्द्रित कर लिया कि जिसने,
निज हाथों में पांचों जन का,
उसको पहचानो रे।
चीन्हों! नष्ट करो उस जनद्रोही को,
दिव्य बिजलियाँ बनकर उस पर टूट पड़ो रे।

शोषण और विषमता की व्यवस्था के खिलाफ इससे अधिक प्रचण्ड उद्घोष क्या हो सकता है?व्यक्तिवाद और उपभोक्तावाद की चूलें हिलाने वाला मन्त्र भी देखिये – केवलाघो भवति केवलादी अकेला खाने वाला पाप की कमाई खाता है।

किसी समाज व्यवस्था में सबसे अहम् प्रश्न होगा कि उत्पादन और वितरण के साधनों का स्वामी कौन होगा? दूसरे शब्दों में क्या सम्पत्ति पर वैयक्तिक स्वामित्व होगा अथवा राज्य का अथवा समाज का?

इन प्रश्नों पर वेदों में एक बार नहीं हजार बार यह स्पष्ट है कि सम्पत्ति व्यक्तिगत स्वामित्व में नहीं अपितु समाज के सामूहिक स्वामित्व में होनी चाहिए :–

ओ३म् ईशवास्यं इदं सर्वं यत्किंचत् जगत्याम् जगत्
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्?

यजुर्वेद 40–1

ओ३म् समानी प्रपा सह वो अन्नभागः समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि
सम्यंचोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः। अथर्ववेद 3–30–6

गुरु नानक देव जी जब वंडके खा ते दब के वाह बांट कर खाओ और जमकर परिश्रम करो – कह रहे थे तो वे वेद की इन ऋचाओं का ही आम जनता की भाषा में अनुवाद कर रहे थे –

सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यम् करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै। कठोपनिषद् – 2–6–19

इस तरह हम यह पाते हैं कि वर्णाश्रम–व्यवस्था आज की मौजूदा जातिवादी व्यवस्था के ठीक विपरीत है। आज की शोषण, अन्याय एवं विषमता पर आधारित व्यक्तिवादी विचारधारा को नकारती, ठुकराती वर्णाश्रम व्यवस्था न्याय, सहयोग एवं समता पर आधारित समष्टिवादी विचारधारा है। आज के भोगवादी भौतिकवादी यान्त्रिकी मूल्यों की जगह वर्णाश्रम त्यागपूर्वक भोगने, सादा जीवन उच्च विचार की संस्कृति को बढ़ावा देती है और बच्चे से लेकर बूढ़े तक प्रतिक्षण, प्रत्येक व्यक्ति को उसके जीवन के प्रति आस्था के साथ–साथ आध्यात्मिक मूल्यों के सामाजिक आर्थिक राजनैतिक व्यवस्थाओं की धुरी पर प्रतिष्ठित करती है। इन सबसे बड़ी बात तो यह है कि वर्णाश्रम व्यवस्था रूढ़िवादी धर्मों की कैद से ईश्वर को मुक्त करती है और समाज परिवर्तन की प्रेरक शक्ति बनाती है।

अपनी बात को रेखांकित करने के उद्देश्य से मैं अन्त में सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम पृष्ठों से मनुष्यता को परिभाषित करने वाला महर्षि दयानन्द का यह सबसे अधिक तेजस्वी वाक्य उद्धृत करना चाहूँगा :

मनुष्य उसी को कहना कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख और हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं कि चाहे व महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों उनकी रक्षा, उन्नति और प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक कभी न होवे।''

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

The Times of India, 2 July, 2013

Time to revive peace talks with Maoists: Agnivesh

NAGPUR: He was once the government interlocutor for talks with the CPI (Maoists). But after the alleged encounter death of Naxal leader CherukuriRajkumar alias Azad exactly three years ago on this day, the process got derailed. Swami Agnivesh, now dejected with the government's handling of the issue, said it was time to revive the peace talks. "Prime Minister Manmohan Singh should immediately initiate a dialogue for peace with the Maoists to end the left-wing violence in the country," the Swami said here on Monday.

He said the process should be initiated at the PMO level because the home ministry had lost faith after the Azad encounter. "The Maoists believe that Azad along with journalist Hemchandra Pandey were picked up from Nagpur railway station and gunned down here by the Andhra Pradesh police. Later, the AP squad claimed that the duo was killed in a gunfight at Sarkapalli in Adilabad district," said Agnivesh who has been fighting for rights of the bonded labour and unorganized workers for last four decades.Azad was close to Maoist general secretary Pupalla Laxmanrao alias Ganapathi regarded by many as the second-in-command. "On instructions of then home minister P Chidambaram, I was facilitating talks between the Centre and the Maoists. Azad was my main link with the Maoist leadership and we were on the track to crack peace. But apparently, a section of people including Andhra Pradesh police did not want the peace process and the Maoist leader was killed in fake encounter to scuttle the move," he alleged and said that it was betrayal of peace process.

"I was shocked by his death and approached Chidambaram, Manmohan Singh, Rahul Gandhi, BJP leaders LK Advani and Arun Jaitley as some other ministers in UPA government. Except Chidambaram, everyone including the PM accepted my demand for a judicial probe into the killing of Azad. But the government failed to do it and the Supreme Court, on our petition, ordered a CBI probe. Chidambaram made all efforts to manipulate the CBI probe and the AP police got a clean chit in the matter," alleged Agnivesh reiterating the demand for a fresh judicial inquiry into the matter.

Prime Minister Manmohan Singh should immediately initiate a dialogue for peace with the Maoists to end the left wing violence in the country

- Swami Agnivesh

Naxal commander offers to surrender

Nagpur : A senior Naxalite, commander of jantana sarkarand member of Aheri Area committee, is learnt to have approached the Anti Naxal Operations (ANO) cell with an intention to return to the mainstream following his age related complication.

Vasant Madavi, after remaining in the Naxal movement for several years, has said to be suffering from failing eyesight which has limited his abilities in operations and movements after sunset Madavi offered to surrender through the special Action Group commandos who were conducting operations in the locality. A senior officer said that Madavi's name has been traced in the police records but he is yet to be declared as surrendered. Gadchiroli police have rejuvenated the surrender policy this year with the launching of 'Nav Jeevan' scheme where senior cops are visiting the families of the Naxalites, urging them to convince their family members in the movement to return to the mainstream without fear.

Apart from madavi, it has been reliably learnt that two more former Naxalite coupes are on their way to be presented as surrenders after they have returned through the cops.

प्रतिष्ठा में:–

अवितरण की दशा में लौटाएँ–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

हे मूर्ति में भगवान को समेटने वालों संभल जाओ अधर्म को धर्म कहने वालों

– एमी धनखड़

मैंने पूछा हे केदारनाथ !
भक्तों का क्यों नहीं
दिया साथ ?
खुद का धाम बचा कर
सबको कर दिया अनाथ।
वे बोले मैं सिर्फ मूर्ती
या मंदिर में नहीं
पृथ्वी के कण कण में
बसता हूँ
हर पेड़ हर पत्ती
हर जीव, हर जंतु,
तुम्हारे
हर किन्तु हर परन्तु में
हर साँस में हर हवा में
हर दर्द में हर दुआ में
मैं बसा हूँ
तुमने प्रकृति को बहुत छेडा
पेड़ों को काटा पहाड़ों को तोड़ा
मुर्गी के खाए अंडे
कमजोरों को मारे डंडे
खाया पशु पक्षियों का माँस
मेरी हर बार तोड़ी साँस
फिर आ गए मेरे दरबार
मेरा अपमान करके
मेरी मूर्ति का किया सत्कार
हे मूर्ति में भगवान को समेटने वालों
संभल जाओ अधर्म को धर्म कहने वालों
मेरी करते हो हिंसा और फिर पूजा
अहिंसा से बढ़ कर नहीं धर्म दूजा
मेरे नाम पर अधर्म करोगे
तो ऐसा ही होगा
दूसरे जीवों को अनाथ करोगे
मंजर इससे भीषण होगा।

Aimy Dhankar
aimy4300@gmail.com

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

श्री सम्पादक जी आपके लोकप्रिय साप्ताहिक 'वैदिक सार्वदेशिक' के माध्यम से एक गम्भीर विषय की ओर आपका तथा पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। आर्य जगत आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा (दिल्ली) का साप्ताहिक पत्र है । उसके ३० जून २०१३ के अंक में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बुढ़ार में आयोजित सामवेद पारायण यज्ञ का समाचार सचित्र प्रकाशित हुआ है । उसका स्केन कापी इस मेल के साथ संलग्न किया है। इसमें आप देख सकते हैं कि स्वामी दयानन्द जी तथा महात्मा हंसराज जी के चित्रों को फूलों की माला पहनाई गई हैं । हमारी दृष्टि में इन चित्रों को माला पहनाना आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है । ऐसी प्रथा को तत्काल रोका न गया तो आगे चलकर यही मूर्तिपूजा की ओर हमें ले जा सकता है। स्वामी दयानन्द जी नहीं चाह्ते थे कि उनके चित्रों को उनके ही अनुयायी लोग इस प्रकार से माला आदि से सुशोभित करेंगे। उनके जीवनचरित्र में कहीं पढ़ा है कि एक बार जब उनका फोटो लिया गया था तब उन्होंने उपस्थित लोगों को सावधान करते हुए कहा था कि – मेरे चित्र को आर्य समाज में मत लगाना, अन्यथा लोग पूजने लगेंगे ।

महर्षि दयानन्द जैसा मूर्तिपूजा (तथा व्यक्तिपूजा) का आलोचक – खण्डनकर्ता दूसरा कौन पैदा हुआ है ?उन्हीं के अनुयायी विवेक भूलकर ऐसे कृत्य करते रहें तो आगे क्या होगा ?सुधी आर्य जनों को इस पर गंभीरता से विचार करना होगा ।

– भावेश मेरजा, **e-mail:- bcmerja@gmail.com**

वैदिक सार्वदेशिक पिछले कई महीने से मुझे प्राप्त नहीं हो रही थी। अतः पुनः मिलनी प्रारम्भ हो गई है। पत्रिका के प्रारूप में परिवर्तन एवं पाठ्य सामग्री का चयन स्वागत योग्य है। आशा है पत्रिका को और अधिक उपादेय बनायेंगे राष्ट्र के समस्त आर्य समाजों को रचनात्मक एवं आन्दोलनात्मक कार्यक्रमों के लिए प्रेरणा और मार्ग दर्शन प्रदान करें। आशा है इस दिशा में सभा सुनियोजित पग उठायेगी।

– रामचन्द्र कुमार, प्रधान आर्य समाज, उम्दा बाजार

अंधविश्वास, रूढ़िवाद, अवतारवाद एवं पाखण्ड के खिलाफ
महर्षि दयानंद की सिंह गर्जना
– सत्यार्थप्रकाश का
११ वां समुल्लास
मंगाये, पढ़े, पढ़वायें, बाटें, भेंट करें
मात्र 20 रुपये सहयोग राशि
10 या अधिक प्रतियाँ मंगाने पर 50 प्रतिशत छूट
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली - 110002
दूरभाष :- 011-23274771, 23260985

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : *Sarvadeshik@yahoo.co.in* वैबसाइट : *www.vedicaryasamaj.com*

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।